AGRADIANCE

"To Bring Together People of God"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWS LETTER

MARCH 2022

St. Patrick, 17 March

St. Joseph, 19 March

May the Passion of Christ, strengthen us!

ख्रीस्त का दु:खभोग हमें सबल बनाए!

Archdiocese at a Glance

St. Lawrence Minor Seminary Annual Day, Agra (Sunday, 27 Feb. 2022)

Minor Seminarians' Outing to Anoop Nagar, Kosi & Jaith (29 Feb. 2022)

Holy Childhood Day Celebration; St. Jude's, St. Patrick's and Cathedral Church

Women's Day Celebration: Noida, Tundla and Havelock Church, Agra Cantt

Editorial

प्रिय मित्रों, अग्रेडियन्स का मार्च महीने का दु:खभोग काल विशेषांक आपके हाथों में है। चालीसा या प्रभु के महा दु:खभोग से सम्बन्धित बहुत कुछ पठनीय सामग्री आपके चिन्तन और अभ्यास के लिए इसमें आप पाएंगे।

इन दिनों हम प्रभु के दु:खभोग काल में हैं। स्वाभाविक है कि इन दिनों गिरजाघरों में भक्तों की भारी भीड़ लगी हुई है। विशेषकर प्रत्येक शुक्रवार को 14 मुकामों (क्रूस रास्ता) और पवित्र मिस्सा में बढ़चढ़कर लोग भाग ले रहे हैं। इनमें आधे से ज्यादा लोग तो बरसाती मेंढकों के समान हैं, जो केवल एक सीज़न विशेष में ही निकलते हैं, बाकी समय अपने कामों में, रोज़मर्रा की जिन्दगी में व्यस्त रहते हैं। चालीसा के शुक्रवारों को बड़ी भक्ति से रोज़ा-परहेज़ (उपवास) में भाग लेंगे, गिरजाघर जाएंगे और पूजन-पद्धति में भाग लेंगे। यह अपने आप में बहुत अच्छी और सराहनीय बात हैं। लेकिन फिर हर हफ्ते रविवार को, हुकुम परबों पर मिस्सा में भाग क्यों नहीं लेते? यह अपने आप में एक चिन्तन का विषय है।

चालीसा या दु:खभोग काल, जिसे अंग्रेजी में 'लैण्ट सीज़न' कहते हैं। यह शब्द प्राचीन अंग्रेजी 'एंग्लो सैक्सन' से लिया गया है, जिसका मतलब है- 'स्प्रिंग क्लीनिंग' अर्थात् बसन्त ऋतु में सफाई। जिस प्रकार बसन्त ऋतु को सभी ऋतुओं का सरताज या शीर्ष कहा जाता है, और उस समय या उसके तुरंत पश्चात पतझड़ में पत्तों के झड़ने पर जो सफाई की जाती है उसी भावार्थ को लैण्ट सीज़न के रूप में लिया गया है- वर्ष भर की गन्दगी को दूर करना। विभिन्न आध्यात्मिक साधनाओं और पाप स्वीकार संस्कार द्वारा हम स्वयं को प्रभु के नजदीक आने के योग्य बनाते हैं। राख बुधवार के दिन हमें पूजन-पद्धति में चालीसा का सदुपयोग करने के लिए तीन प्रमुख साधन दिए जाते हैं, प्रार्थना, उपवास एवं दान-दक्षिणा। इन तीन साधनों के ज़रिए हम प्रभु के नज़दीक आते हैं। आत्मिक रूप से उन्नति करते हैं। अपने पुराने या पापी स्वभाव को त्यागकर एक नया हृदय पाने के लिए प्रयत्न करते हैं।

बहुत से भले ख्रीस्तीय का 'बरस-बरस कम से कम एक बार पाप स्वीकार करना' में विश्वास करते हुए इन दिनों पाप स्वीकार संस्कार में भाग लेते और प्रभु की दया प्राप्त करते हैं। कभी-कभी कुछ लोग भूल भी जाते हैं, कि किस प्रकार से पाप स्वीकार संस्कार में भाग लेना है, फादर क्या पूछेंगे... हमें क्या प्रार्थना करनी पड़ेगी। बस ऐसी ही कुछ बातों को लेकर नर्वस हो जाते हैं- पाप स्वीकार करने आने से भागते हैं। ऐसे सभी लोगों को हमारी सलाह है कि आप बिल्कुल भी मत डरिए या नर्वस होइए। प्रार्थना करना भूल भी गए हैं, तो भी कोई बात नहीं है। बस पुरोहित के पास जाने से पहले कुछ पल एकान्त में बिताकर याद कीजिए कि पिछला पाप स्वीकार आपने कब किया था और तब से लेकर अब तक आपने छोटी/बड़ी क्या गलतियां की हैं, उन्हें याद करके ही ईमानदारी से पाप स्वीकार संस्कार में अपने पुरोहित को बता दीजिए। कुछ भी छिपाएं नहीं। जितना याद है, सब बता दें। तत्पश्चात पुरोहित सलाह और दण्ड मोचन के रूप में आपको जो बताएं, उसे पूरा करें, बस हो गया। आप स्वयं महसूस करेंगे चूंकि पाप स्वीकार संस्कार में भाग लेकर आप कितना हल्कापन अनुभव करेंगे।

गत माह हमारे गुरुकुल छात्रों ने वार्षिक गुरुकुल दिवस मनाया। विभिन्न रंगारंग प्रस्तुतियों से दर्शकों का मन जीत लिया। इस अवसर पर मुख्यातिथि महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि जी ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए उनका आह्वान किया, कि वे अपनी क्षमताओं/गुणों को विकसित करें, कलीसिया और समाज के प्रति समर्पित हों, ये दोनों बहुत उत्सुकता से उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, और साथ ही प्रभु से वायदा करें, कि वे आजीवन उसके प्रति समर्पित रहेंगे। नर और नारायण की जी जान से सेवा करेंगे।

गत माह धर्मप्रांत की कुछ पल्लियों में पवित्र बालकपन का पर्व और अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। सम्बन्धित फोटो और समाचार प्रकाशित किए जा रहे हैं।

बहुत सारे बच्चे बोर्ड की परीक्षाओं की भी तैयारियां कर रहे हैं, हालांकि अधिकांश छात्र छात्राएं और उनके अभिभावक चाहते हैं, कि ये परीक्षाएं भी ऑनलाइन हों। सभी जगह अब परीक्षाएं ऑफ लाइन होंगी। आपको भी अग्रेडियन्स की शुभकामनाएं।

रूस-यूक्रेन के बीच शांति स्थापित हो, इसके लिए प्रार्थना करते रहिए। आपके पत्रों, आलोचनाओं और सुझावों का सदैव स्वागत है।

ख्रीस्त में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस (कृते, अग्रेडियन्स परिवार)

Shepherd's Voice

In the whole of God's creation, I wonder if there is any other species as violent as the humans. Our history is but a series of conflicts and wars, along story of man's inhumanity to man. What began in the garden of Eden between two brothers, Cain and Abel, has come down to our times. With the passage of time violence has spiralled relentlessly, from man against man to gang against gang, tribe against tribe, nation against nation. Today swords and spears have been replaced with weapons of mass destruction such as cluster bombs, ballistic missiles and nuclear bombs.

War brings in its train hunger and pain, death and destruction. The level of progress and development nations arrived at after decades of struggle and hard work, are all destroyed in the blink of an eye. Television coverage of Russia's assault on Ukraine has brought before our eyes thousands of disturbing images of the trail of destruction. And all this is happening in 2022, not in the Middle Ages. I am reminded of Sisyphus of Greek mythology who is forced to roll an immense boulder up a hill only for it to roll down every time it neared the top. Since we forget history, we are condemned to repeat history. The chain of building and breaking will go on until we learn from our past mistakes and continue to remember the lessons we learnt.

Gandhiji once said, "Peace between nations must rest on the solid foundation of love between individuals. Love gives mena partnership in the cares and needs of others. Hate and competition then yield to co-operation". In the Book of Genesis, the Lord asked Cain why he was angry: why his face was downcast. And cautioned him that if he did not empty out the negative feelings of his heart, it is only a matter of time before he got sucked into a vortex of violence and sin (see Gen 4:6-7). Two thousand years ago, Jesus told us that the root of the sin is in the heart: "For out of the heart come evil thoughts-murder, adultery, sexual immorality, theft, false testimony and slander". The heart is like a vessel; whatever is filled in it,is what will spill over on to others and spread in the society. If our hearts are filled with love, joy and peace, we will be instruments of love, joy and peace in the society and the world.

As we live in families or communities, it is quite possible that we sustain a number of hurts-unfair criticism, neglect, misunderstanding, a snub etc.These hurts can generate anger and fury against those who have hurt us. If we do not practice self-emptying, the destructive force of violence can take possession of us and wreak havoc in the community. That is why examination of conscience and prayer are so important. The Father of the nation said: "Prayer

is the only means of bringing about orderliness and peace and repose in our daily acts". Jesus said, "Watch and pray so that you will not enter into temptation" (Mt 26:41).The Lenten Season is an oportune time to grow in the Spirit of prayer. Let us pray for ourselves, for those whom we call friends and for peace in the world.

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (हिन्दी अनुवाद)

ईश्वर की समस्त सृष्टि में, मुझे यह सोचकर कभी-कभी आश्चर्य होता है, कि क्या इंसान से बढ़कर भी कोई हिंसात्मक (पशु) है? वैसे तो हमारा इतिहास युद्धों और संघर्षों की सतत् गाथा है, एक मनुष्य की दूसरे मनुष्य के साथ की गई अमानुषिकता और क्रूरता की एक लम्बी कहानी है। अदन वाटिका में दो भाइयों के बीच जो कुछ हुआ, वह हमारे काल (समय) में भी जड़ें जमा चुका है। समय के साथ-साथ हिंसा भी एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य तक, एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र तक लगातार अनवरत बढ़ती जा रही है। वर्तमान समय में तलवारों और भालों की जगह बमों के गुच्छों, प्रक्षेपास्त्रों, मिसाइलों और आणविक बमों ने ले ली है।

युद्ध अपने साथ भूख और पीड़ा, मृत्यु और विध्वंस का सिलसिला या कड़ी लेकर आता है। दशकों के संघर्ष और कठिन परिश्रम के बाद राष्ट्र तरक्की और विकास कर पाते हैं और फिर पलक झपकते ही वहाँ सब कुछ बरबाद या नष्ट हो जाते हैं। हाल ही में हमने रूस द्वारा यूक्रेन पर किए गए हमलों की दिल दहलाने वाली तस्वीरें टेलीविजन पर देखीं। यह सब आज वर्ष 2022 ई. में हो रहा है, न कि मध्यकालीन युग में। मुझे यूनानी सिसिफुस की पौराणिक कथा की याद आती है, जहाँ उसे बड़ा भारी गोल पत्थर (शिलाखण्ड) लुढ़काकर-खींचकर ऊपर पहाड़ी तक ले जाना है... जैसे-जैसे वह उसे लेकर चोटी तक पहुँचने लगता है, पत्थर फिसलकर फिर से नीचे की ओर गिरने लगता है। चूँकि हम इतिहास भूल जाते हैं, इसीलिए हम इतिहास को दोहराने की निन्दा करते हैं। निर्माण करने और उसका विध्वंस करने की श्रृंखला उस समय तक चलती रहेगी, जब तक कि हम भूतकाल में की गई अपनी गलतियों से पाठ नहीं सीखते हैं और उसे भविष्य में याद रखते हैं। गाँधी जी ने एक बार कहा था, कि ''राष्ट्रों के बीच शांति व्यक्तियों के बीच प्रेम की सुदृढ़ नींव पर निर्भर करती है। प्रेम दूसरों की देखभाल करने और उनकी जरूरतों में मदद करने में हमें सहयोगी बनाता है। इस तरह नफरत और प्रतियोगिता की भावना भी सहयोग की भावना बन जाती है।'' उत्पत्ति ग्रन्थ में प्रभु ईश्वर काईन से पूछता है, कि वह क्यों क्रोधित था? क्यों उसका चेहरा उतरा हुआ था? प्रभु उसे सावधान करता है, कि यदि उसने अपने हृदय से नकारात्मक भावनाओं को नहीं निकाला, तो यह केवल चन्द पलों की बात है, कि वह बहुत जल्दी ही हिंसा और पाप के बवण्डर (चक्रव्यूह) में फंस जाएगा। (सन्दर्भ-उत्पत्ति 4:6-7)। दो हज़ार वर्ष पूर्व प्रभु येसु ने हमें बताया कि पाप की जड़ हृदय में होती है; ''क्योंकि मनुष्य के हृदय से ही दुष्ट विचार, हत्या, व्यभिचार, योनिक अनैतिकता, चोरी, झूठी, गवाही और निन्दा निकलते हैं।'' हमारा हृदय एक पात्र (बर्तन) के समान होता है; उसमें जो कुछ भी भरा जाता है, वही हम दूसरों पर छिड़केंगे और समाज में फैलाएंगे। यदि हमारे हृदय प्रेम, आनन्द और शांति से भरे हैं, हम समाज और

संसार में प्रेम, आनन्द और शांति के माध्यम (स्रोत) बनेंगे। चूँकि हम परिवारों में या समुदायों में रहते है; इसीलिए यह बिल्कुल संभव है, कि हम में बहुत सारी चोट (ठेस) होंगी, अनुचित आलोचनाएं होंगी, नकारात्मकता, गलतफहमियाँ, अपमान और डाँट डपट होगी। यदि हम अपने आपको खाली नहीं करेंगे, अपने मन से नकारात्मकता नहीं निकालेंगे, तो नफरत की विध्वंसकारी शक्तियाँ शीघ्र ही हमारे ऊपर अपना नियन्त्रण कर लेंगी और हमारे समाज को बरबाद कर देंगी। इसीलिए अपने अन्त:करण की जाँच और प्रार्थना बहुत आवश्यक है। हमारे राष्ट्र पिता ने कहा था; ''केवल प्रार्थना ही वह माध्यम है, जो हमारे प्रतिदिन के जीवन में व्यवस्था, शांति और धैर्य ला सकती है।'' प्रभु येसु ने कहा, ''जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो।'' (मत्ती 26:41) चालीसा (या दु:खभोग) काल एक विशेष समय है, जब हम प्रार्थना करने के मनोभाव में उन्नति कर सकते हैं। प्रार्थना का मनोभाव अपना सकते हैं। आइए, हम अपने लिए, जिन्हें हम अपने मित्र कहते हैं उनके लिए और विश्व में शांति (स्थापना) के लिए प्रार्थना करें।

ख्रीस्त में आपका,

✠ **राफी मंजलि**

(महाधर्माध्यक्ष, आगरा महाधर्मप्रांत)

ARCHBISHOP'S ENGAGEMENTS (MARCH, 2022)

2	Holy Mass: Cathedral Church, Agra
3	Meeting: St. Dominic's Sr. Sec. School, Mathura
6	Meeting: Holy Family Association, Agra
10	Meeting: St. Felix Nursery School, Agra
11	Meeting: St. Theresa's School, Kosikalan
11	Meeting: Nishkalanka Mata School, Jaith
12	Meeting: St. John's Sr. Sec School, Firozabad
13	Holy Mass: Cathedral Church, Agra
13	Meeting: Association of Catholic Higher Education, Agra
14	Rectors' Meeting: MVP, Etmadpur
16	Meeting: St. John's Medical College, Bangalore
20	Holy Mass: St. Joseph's Church, G. Noida
21	Meeting: Managers, Principals & Accountants
22	Meeting: St. Paul's Inter College, Agra
23	Meeting: St. Joseph's School, Kasganj
24	Meeting: St. John Paul II School, Fatehabad
26	Blessing: St. Mary's Convent School, Runakta, Agra
27	Pastoral Visit: St. Mary's Church, Agra
28	Meeting: Christ the King Inter College, Tundla
30	Meeting: ARBC
31	Meeting: ARBC

Pope Francis Appeals for Peace in Rare Russia Embassy Trip

Rome: Pope Francis visited the Russian Embassy on Friday 25 Feb. to personally "express his concern about the war", the Vatican said, in an extraordinary, hands-on Papal gesture that has no recent precedent. Usually, Popes receive Ambassadors and Heads of State in the Vatican, and diplomatic protocol would have called for the Vatican foreign minister to summon the envoy. For Pope Francis, the decision was a sign of anger at Moscow's invasion of Ukraine and willingness to appeal personally for an end to it. Vatican officials said they knew of no such previous Papal initiative, Francis has called for dialogue to end the conflict and has urged the faithful to set next 2 March as a day of prayer for peace, but he refrained from publicly calling out Russia, presumably for fear of antagonizing the Russian Orthodox Church. The Embassy is yet to comment.

THE ARCHDIOCESE OF AGRA

Most Rev. Dr. Raphy Manjaly
Archbishop of Agra

CATHEDRAL HOUSE
WAZIRPURA ROAD
AGRA - 282 003 U.P. (INDIA)
: (O) (0562) 2851318, 2526397
: (P) (0562) 2527208
: archdagra@gmail.com

February 19, 2022

My Dear Fathers, Sisters and Brothers,

Grace and peace from God our Father and the Lord Jesus Christ!

I. LENT: With Ash Wednesday, which this year falls on the 2nd March, we will enter into the Holy Season of Lent. Pope Francis' Lenten message begins with this sentence, "Lent is a favourable time for personal and community renewal, as it leads to the paschal mystery of the death and resurrection of Jesus Christ". Further he says, "Lent invites us to conversion, to a change in mind-set, so that life's truth and beauty may be found not so much in possessing as in giving, not so much in accumulating as in sowing and sharing goodness". In other words, it is a time to outgrow sin and sinful tendencies through practice of virtues or righteousness.

A. Biblical Words for Sin: In the Bible sin stands for the idea of *missing the mark*. **Judges 20:16** speaks about seven hundred left-handed Benjaminites who are able to sling a stone at a hair's breadth without missing. The word translated "miss" is the same as the word "sin". Refusing to grow into the image and likeness of God is to miss the mark or goal of our life. Close to this idea of sin is Prophet Daniel's words to Belshazzar, son of Nebuchadnezzar: "You have been weighed on the scales and found wanting" **(Dan 5:27)**. St. 'John of the Cross would have paraphrased it as: "You have been measured by love and found wanting". According to St. Paul it would be falling short of the glory of God **(Rom 3:23).**

Another Biblical word for sin is *rebellion or transgression*. Whereas rebellion indicates a state of mind which opposes the will of God, transgression describes the action which follows. Men are "alienated" from God, and they have become "enemies" in their minds **(Col 1:21)**. According to Fr. Joseph Neuner sin is radical isolation. Man separates himself from the source of life and makes himself the goal and centre of his life and actions. This alienation has found expression in the spirit of revolt and the refusal of subjection to God. Behaviour of this kind is described as "transgression" that is, stepping over the *Lakshman Rekha* (Commandments of God). As pope Benedict XVI once said, when divine law is ignored, sooner or later human law too will disappear, "because there is no corner stone to keep the whole structure together".

Yet another Biblical word for sin is ***"iniquity"***. It means crookedness, perversion, distortion. It is the opposite of being straight or upright. It conveys the idea that what was originally straight has become bent and twisted. Man is no longer as God made him, but has become disfigured.

B. Repentance and Forgiveness of Sin: Sin is to be repented of and forsaken, This is God's primary invitation to sinners. Through prophet Isaiah the Lord says, "Let the wicked abandon his way, let him forsake his thoughts, let him turn to Yahweh for he will have mercy, for our God is generous in forgiving" **(Is 55:7)**. According to Mark the Evangelist, Jesus began his ministry with the call to repentance, "The time has come; the kingdom of God is at hand. Change your ways and believe the Good News" **(Mk.1:15)**. His disciples too did the same. On the day of Pentecost Peter said: "Each of you must repent and be baptized in the name of Jesus Christ, so that your sins may be forgiven" **(Acts 2:38).**

Repentance is a change of mind about sin accompanied by a detest for it and a turning away from it. Repentance is choosing to live as the image and likeness of God. Repentance will impel one to re-establish his/her relationship with God, neighbour, true self and creation. When one truly repents of sin he/she will confess it to God. King David acknowledged his sin. Then I made known to you my sin and did not cover my iniquity. He said, I will confess my faults to the Lord, and you will forgave the guilt of my sin" **(Ps 32:5)**. The prodigal son said: "Father, I have sinned against Heaven and before you" **(Lk 15:21)**. St. John assures us, "If we confess our sins he who is faithful and just will forgive us our sins and cleanse us from all wickedness" **(1 Jn 1:9).**

Sin is not the central message of the Bible, but redemption of human kind through our Lord Jesus Christ by the Father who loved the world so much. St. Paul asks the Christians of Rome, "Can we sin again?", and gives the answer too, "Of course not: we are dead regarding sin" **(Rom 6:2).**

(I am enclosing the Lenten and other annual regulations for the year)

II. Canonization of Martyr Devasahayam: By now you must have received the news that Martyr Devasahayam will be Canonized on Sunday 15th May, 2022. He is the first lay person and the first married person from India to be conferred Sainthood, It goes without saying that his Canonization will be the cause of much joy and source of many blessings for the Church in India.

To celebrate this auspicious event CBCI together with the Canonization Committee of the Diocese of Kottar will be holding programmes such as All India Quiz Competition, Essay Competition, Hour of Prayer and Thanksgiving Celebration. May I expect your fullest participation and cooperation so that the above mentioned programmes may bear much fruit and become a resounding success.

The day set apart for the **National Hour of Prayer is Friday, 24th June 2022,** Feast of the Sacred Heart of Jesus. During this hour consecration of families to the Sacred Heart could be done. May the Martyrdom of Blessed Devasahayam strengthen the faith of the Christians

in India and inspire them to give courageous witness to the Gospel. May his intercessory prayer obtain numerous blessings for the faithful.

III. Sharing of Information:

a. Sacerdotal Ordinations in our Archdiocese will take place on 24th April (Divine Mercy Sunday), 2022. Kindly remember in your prayers Dn. Kulkant Chinchhani, Dn. Asime Beck and Dn. Andrew Sachit Kerketta.

b. The Pastoral visit and Internal Audit will begin from July 2022; You are requested to keep up-to-date the registers, files, Accounts. etc.

c. Please remember to send to the curia your budget for the ensuing financial year before the end of April, 2022.

d. As decided in the last meeting, the next Clergy Recollection cum Meeting is scheduled for Thursday, 24th February 2022. All of you are requested to make it convenient to attend the meeting.

With every good wish and the assurance of prayers,

Yours devotedly in Jesus,

+ R. Manjaly

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

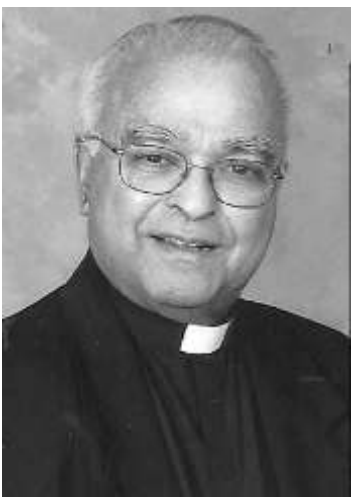

Dear Fathers, Sisters and Brothers,
We have received the sad news that Rev. Fr. Edwin D'Souza (85 years), brother of Archbishop Albert D'Souza, passed away on Feb. 21, 2022 due to a massive heart attack. He was a priest of the Archdiocese of Totonto, Canada. His funeral is scheduled for **March 12**. Your valuable prayers are solicited for the repose of soul. As we condole his death, let us also pray for Archbishop Albert D'Souza and for the members of his family. May God grant eternal peace to the departed Priest Edwin D'Souza, and faith and strength to the bereaved family.

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

THE ARCHDIOCESE OF AGRA

Most Rev. Dr. Raphy Manjaly
Archbishop of Agra

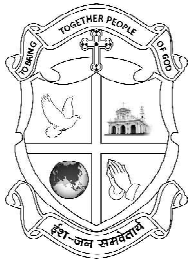

CATHEDRAL HOUSE
WAZIRPURA ROAD
AGRA - 282 003 U.P. (INDIA)
: (O) (0562) 2851318, 2526397
: (P) (0562) 2527208
: archdagra@gmail.com

February 19, 2022

Lenten Campaign against Hunger and Disease

Dear Father/Brother/Sisler/Lay-faithful,

The Lenten season culminating in the Easter celebration is the most significant period of the liturgical year. The Lord invites us to enter more deeply into His paschal mystery and realize in our own lives His passion, death and resurrection. What took place in each one's baptism is renewed in a profound way during this period.

During Lent we emphasize penance. This leads to an expression of one's authentic conversion, helping us to be renewed in our Christian life. To ensure this, the Church has provided various alternatives for penance that we can choose from. We should never forget that the purpose of penance is growth in Christian life.

At Lenten time, the Church has a hallowed custom of organizing a Campaign against Hunger and Disease.

We are encouraged to sacrifice our legitimate pleasures and even some of the normal requirements and contribute the amount thus saved to the Campaign. The amount thus collected is utilized to feed the hungry, clothe the naked, shelter the homeless, help the victims of calamities, Social development programmes, mindful that whatever we do to the least of our brothers and sisters, we do to Christ Himself. The Holy Father has reminded the world bodies "that poverty continues to spread even white many countries experience unprecedented prosperity." He has appealed that the "world must do more to prevent hunger."

Here are a few concrete suggestions which can help make the Lenten Campaign successful;

a. Every presbytery, community and family can decide on skipping a meal or two- chocolates/ sweets/ cold drinks/ fruits/ non-veg/ice cream- every week of Lent and contribute the equivalent amount to this Campaign.
b. One can abstain from tobacco, alcoholic drinks, movies, other pleasures and pleasure trips.
c. A collection can be taken up after the Stations of the Cross every week.
d. Gullaks/envelopes can be distributed to families to put in any change that they decide on.
e. A special box can also be placed in the Church for contributions to the Campaign.

f. Schools can organize some awareness programmes leading to contributions ensuring however the personal growth of the students is further enhanced.

One meaningful suggestion is that the amount thus collected can be brought to the Church on Easter or the following Sunday as part of the Offertory procession.

This year the theme of the Lenten programme is **"HEALTHY PLANET, HEALTHY LIFE".** The Campaign material will be made available to you soon.

Your contribution may please be sent to the **Financial Administrator, Rev. Fr. Thomas Mathew,** by **April 11,2022.** Cheques/DD may please be made in favour of **'Roman Catholic Diocese of Agra Pvt, Ltd.'** In case of direct Bank Transfer, the following is the reference:

CANARA BANK, ST. PETER'S COLLEGE BRANCH, AGRA

A/c No. 3024101000099; IFSC No. CNRB 0003024

Wishing you a holy Lenten season and with warm regards. May God bless you!

Yours sincerely in Christ,

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

10 Tips for making Lent more meaningful

1. Slow Down: Set aside ten minutes a day for silent prayer or meditation. It will revitalize your body and your spirit.
2. Read a good book:You could choose the life of a Saint, a spiritual how-to or an inspirational book written on FAITH.
3. Be kind: Go out of your way to do something nice for some one else every day.
4. Draw strength from Him: Attend a Lenten talk or make a pilgrimage to a Spiritual Centre
5. Volunteer at your Parish: Whether it is cleaning the Church or helping the priests in organizing Lenten programmes, it will give you a chance to help others.
6. Reach Out: Motivate an inactive Catholic to come with you to attend prayers, Stations of the Cross, Holy Mass, etc.
7. Pray: Especially for people you don't like and for people who don't like you
8. Tune out: Turn off television and spend that time for visiting the sick and the lonely.
9. Clean out Closets :Donate gently used items to the St. Vincent de Paul Society or to the needy in your vicinity.
10. Increase the dose: And finally give your family an extra dose of love.

Source: Unknown

The Neuroscience of HAPPINESS

'Understanding the nature of HAPPINESS' is a hot new topic in Science - it appears in all the scientific magazines, and the BBC recently devoted a series of programs to the subject, interviewing scientists from all over the world. It even has a name, **'The neuroscience of happiness'.**

The scientists tried to understand how the different mechanisms of desire, want, happiness and pleasure work in the brain. And from their million dollar research on the subject, **they 'discovered' that most of the things we think will make us happy, but they DON'T, at least not for long.** For example to their surprise they found that money, beyond enough for basic needs, does not bring more happiness. Nor do the things money can buy. Research showed that even people who win vast sums in a lottery, after just a few years are as miserable as they were before they won.

Why is this so? The things that give us pleasure are usually physical - they give us bodily gratification or mental gratification. **But all these are transitory pleasures.** After a while, we take 'things', including people, for granted - even things that once made us ecstatic. For example, the new lover, or the new car or house, the new dress or the new technological gadget… the initial thrill soon wears off, and then we are looking for something better. It is what the scientists call the 'hedonic treadmill'.This is pleasure, not happiness.

So what makes one truly HAPPY? The research outlined following four keys thatScience is now proclaiming will improve one's 'HAPPINESS LEVEL':

1. FRIENDLINESS

Scientists say that friendship has a much bigger effect on happiness than a typical person's income, and just as stress can trigger ill health, it looks as if friendship and happiness can boost our immunity against disease.

We all have a huge source of friendliness inside, but in fact, most people die without this source being developed at all, because what we call friendship is usually hypocrisy.

We have to constantly create a milieu of friendliness around ourselves, sending waves of friendly energy all around. One method the research suggests, is, **to do one or two things for others every day, for which you expect nothing in return.**Today, altruism, or performing acts of kindness to others, is one of the main suggestions being proposed by happiness scientists.

2. COMPASSION

Let's face it - usually when we look at people, our thoughts are critical rather than compassionate. But the research says **there is a heart inside the worst of people, and if you are able to see it, you will be filled with compassion.** This is not the same as pity, which makes us feel superior to others, and want to help or change them in some way. Compassion involves love and acceptance of people as they are.

If you can understand compassion, then you will know how to spread happiness to others, and that in turn will develop the happiness center inside you. If, on the contrary, you go on being

cruel and critical and judgmental of others, it will feed your own unhappiness.

3. CHEERFULNESS

The research says, **as 'Sadness' is just a habit, 'Cheerfulness' can also be cultivated as a habit.** We just have to start looking for things in life which are full of light, not darkness, because the way we look at life directly affects what develops inside us. If we see radiance and light everywhere, we will feel radiant and light - we will feel joy.

Doctors have also discovered the benefits of laughter - in many hospitals laughter therapists now work with patients, since it has been shown that people who can laugh heal much faster.

4. GRATITUDE

There are so many things in life to be grateful for, and if we can shift our focus from grumbling or complaining to those things, **if we can start to experience and express gratitude more, the research says, it will change our life tremendously.** We will be filled with so much peace, and so much mystery and wonder.

The happiness scientists even suggest keeping a gratitude diary in which every day you write down things for which you are thankful.

A Sufi mystic who had always remained happy, for seventy years people had watched him, he had never been found sad. One day they asked him, *"What is the secret of your happiness?"* He said, *"There is no secret. Every morning when I wake up, I meditate for five minutes and I say to myself,* ***'listen, now there are two possibilities today: you can be miserable, or you can be blissful. CHOOSE.'*** *And I always choose to be blissful."*

Friends, there are people who can be blissful even when they are imprisoned, and there are people who remain miserable even when they are living in marble palaces.All alternatives are open. As we celebrate the **'International Day of Happiness'** on 20th March, *Let's choose to transform our impure emotions to pure emotions, by developing in ourselves the above mentioned four qualities and* ***BE BLISSFUL!***

Sr. Rekha Punia, UMI
Nirmala Provincialate, G. Noida

Retreat for Religious Sisters

St. Joseph's Pastoral Centre, Agra is organising a Retreat for Religious Sisters. It is a golden opportunity for all, specially who wish to make it. So hurry up... Don't wait for the last moment.

2 Oct. to 8 Oct. 2022
Contribution Rs. 2000/- per head
(inclusive of board and lodge)
Preacher: Rev. Fr. Jitendra D'Monte SJ
Contact:
Fr. Maxim Santosh D'Sa (Director)
(9412340053)
Sr. Monica (7457820053)

Marriage Preparation Course

Next Marriage Preparation Course will be held in **Archdiocesan Pastoral Centre, Wazirpura Road, Cathedral House, Agra.** The course will begin at **12th March, from 4 p.m. to 13th March till 4 p.m. The Registration fee is Rs 500/- per person.** Please do inform your family and friends, who are planning to get married in near future. Interested candidates may contact:-

Fr. Maxim Satntosh D'Sa
(Director- Pastoral Centre)
Contact No. 9412340053

जीवन का स्रोतः प्रभु येशु मसीह

हे परमेश्वर, तेरी करूणा कैसी अनमोल है, मनुष्य तेरे पंखों तले शरण लेते हैं, वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे और तू अपने सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा, क्योंकि जीवन का स्रोता तेरे पास है, तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे। (भजन संहिता 36:7, 8, 9)

कोई मनुष्य जन्म और मृत्यु का अधिकारी हो, जीवन और मृत्यु के लेखा-जोखा की किताब उसी के पास हो, स्वर्ग और नर्क के दरवाजों की कुंजी वह रखता हो, और परम पिता ने कह दिया कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है,'' फिर हम उसे क्या कह कर सम्बोधित करेंगे? फिर वह मनुष्य तो नहीं रहा, चाहे वह अपने आप को कितनी भी बार मनुष्य का पुत्र कहकर संबोधित करे। हम मानते हैं कि परमपिता सर्वोच्च है, लेकिन उसने तो अपने अधिकार जो सर्वोच्च हैं किसी और को दे दिये फिर बकाया कुछ बचता नहीं है। हम पिता के पास पहुँचना चाहें तो हमें उस सर्वोच्च अधिकारी से ही सम्पर्क स्थापित करना पड़ेगा, उसका गुणगान करना पड़ेगा, क्योंकि परमपिता की सब शक्तियों का अधिकारी वही है और पिता की सर्वशक्तियां उसमें विद्यमान भी हैं। वह कौन हैं? वह तो केवल मात्र यीशु ही है, जिसमें ये सारी खूबियां नजर आती हैं। फिर हम देर क्यों करें, क्यों न हम ऐसे प्रभु के चरणों में जाकर अपने आप को धन्य कर लें। प्रभु यीशु के चरणों में वही व्यक्ति आता है जो पीड़ित है, असहाय है, और बोझ से दबा हुआ है। उसने तो पुकार कर, चिल्लाकर और ऊँची आवाज में कहा- 'ऐ थके माँदे, बोझ से दबे लोगों! मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा, मैं तुम्हारा बोझ क्षण मात्र में उतार दूँगा। ऐ प्यासे लोगों मेरे पास आओ मैं तुम्हें जीवन का जल पिलाऊँगा, फिर तुम्हें कभी प्यास नहीं लगेगी।'' उसने जीवन भर की गारण्टी ली, लेकिन जिनको अपने बल का, धन का, मान प्रतिष्ठा का अभिमान है वह प्रभु यीशु के चरणों में नहीं आ सकता; क्योंकि यह मार्ग सकरा है, चौड़ा नहीं कि आए और स्पीड से निकल गये, क्योंकि संकरे मार्ग से आपको धैर्य और झुककर धीरे-धीरे निकलना पड़ेगा।

कभी आपने देखा होगा कि समुद्र में एक व्यक्ति गिरा होता है तो वह अपने बल और ज्ञान के अहंकार में समुद्र से संघर्ष कर तैरकर निकलता चाहता है लेकिन जितना वह संघर्ष करता है उतना थकता है और डूबता जाता है। वह विशाल सागर उसकी कोई मदद नहीं करता, लेकिन वही व्यक्ति जब मर जाता है तो उसी सागर में तैरने लगता है क्योंकि फिर उसने अपने अभिमान को समाप्त कर उस सागर की शरण ले ली, और उस विशाल सागर की हिलोरों में आनन्द करने लगा। सारी पीड़ाओं से मुक्त हो गया, उस विशाल ने उसको क्षमा कर दिया, क्या हम अपनी पीड़ाओं से मुक्त नहीं हो सकते हैं, जब हम इस समुद्री रूप विशाल परमपिता परमेश्वर की मर्जी का कार्य करेंगे, इसकी आशा का पालन करेंगे, इसको प्रति क्षण याद करते रहेंगे कि तेरे सिवा इस दुनिया में कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है, तू दयालु और विलम्ब से क्रोध करने वाला परमेश्वर है, हम शैतान के किसी बहकावें में न आएं। हम धोखे से भी ऐसा कार्य न करें कि तेरी प्रतिष्ठा में कोई आंच आए। फिर देखो हम आकाश के पक्षियों की भांति उड़ान भर सकते हैं, और परमपिता के विशाल स्वरूप सागर में आनन्द के साथ हिलोरे ले सकते हैं, ज्ञान और प्रेम दोनों ही प्रत्येक मनुष्य की निजी सम्पत्ति है। गहराई से सोचें तो ज्ञान के बिना प्रेम मोहमात्र है और प्रेम के बिना ज्ञान अधूरा है। ज्ञानी बेहोश नहीं बहोश जीवन जीता है। दुःख उसे स्पर्श करने में समर्थ नहीं हो पाता इसलिए वह सदा आनन्द के सागर में गोते लगाता रहता है। सत्य एक सूरज के समान होता है जिसे असत्य के बादल कभी भी ढक नहीं सकते। परमेश्वर प्रेम ही जीवन का सत्य मार्ग है। प्रिय परमेश्वर हम पर दया कर कि हम सच्चाई के साथ तेरे बताए मार्ग पर चलें और उसमें दृढ़ रहने में हमारी मदद करें।

— एस.बी. सैमुअल, केन्द्रीय विद्यालय, आगरा

Fasting - May I Do it or Don't Do it?

We are in the Season of Lent. And definitely, the Churches are overcrowded due to their significance, rich liturgical services and personal conviction of each individual of Jesus Christ. Joan Chittister articulates, saying, "Lent is a call to renew a commitment grown dull, perhaps, by a life more marked by routine than by reflection." However, there are some practical implications as a Christian to observe during this season. Fasting is one of them. Actually, with the arrival of Lenten Season, one starts bargaining with menus,

Whether to have veg or non-veg meals,
Whether to go for black coffee
or coffee with milk,
Whether to stop drinking or stop thinking.

Our menus often decide our genuineness towards the Great Salvation, which Christ offered to us through incredible price. What is fasting? You might have heard and read different types of definitions about it.

Fasting is loving oneself wholeheartedly. St. Paul rightly exhorts, 1 Cor 3:16, "Do you not know that you are God's temple and that God's Spirit dwells in you?" Our positive inner coherence directs our actions and words. God invites prophet Joel vehemently, "Return to me with all your heart" (Joel 2:12); returning to God reminds us that we are still worthy in the sight of Him. Fasting is a quality time to be with Jesus since we are ambassadors of Christ and yet to reconcile to God (cf. 2 Cor 5:20).Suppose we take it in a good sense and never as a must and should under pressure and fear.The act of fasting keeps us happy, healthy and holy. Jesus instructs concerning fasting, "and whenever you fast, do not look dismal, like the hypocrites, for they disfigure their faces to show others that they are fasting. Truly I tell you, they have received their reward. But when you fast, put oil on your head and wash your face, so that your fasting may be seen not by others but by your Father who is in secret and your Father who sees in secret will reward you" (Mt 6:16-18).

Today, fasting should not be taken as a burden or an old boring fashion/custom, rather as an opportunity to refine and re-affirm our relationship with the Church and God. Book of Psalms helps us in the words of David, "Create in me a clean heart, O God and put a new and right spirit within me" (51:10). The Lenten Season leads us to the right Spirit, and fasting is a gateway. That's why it is called upvas in the Indian context, which means staying near to the 'truth.'

The person who stays near to Jesus knows Him better. Therefore, when we say 'Let us pray,' it becomes a formula and formal in an allotted time and confined places. But Jesus Christ offers us another opportunity to understand the meaning of Lenten Season through Prayer and Fasting. Our life becomes Prayer, and we have to imbibe the Spirit of Prayer from Christ, "Pray to your Father" (Mt 6:6). We cannot separate ourselves from Abba Father. Gradually we become one with Him as a single entity in Prayer and Fasting.

We are in the right place and right time. Let us not bother about the menu but rather reflect on Christ's life's manifestation during Lenten journey. Show some Almsgiving, Prayer, and Fasting symptoms within your limited and effective capacity. Remain, Holy, Healthy and Happy: it's a Season of Reformation.

–Fr. Alok Toppo, DVK, Bengaluru

उपवास क्यों रखें ?

चालीसा काल अर्थात् लैण्ट सीज़न में सम्पूर्ण विश्व के मसीही लोग दिन-रात उपवास रखते हैं। उनका मानना है कि अपने दु:खभोग से पहले प्रभु येसु भी चालीस दिन तक भूखे-प्यासे रहे थे। अत: मसीही भी पुनरुत्थान पर्व से पहले इसका अनुसरण करते हैं। इन दिनों वे केवल उपवास ही नहीं रखते बल्कि वे मानव मुक्ति के लिए प्रभु द्वारा दिए गए संदेश को याद करते हुए ईसा के उपदेश, दु:खभोग, क्रूस पर सही गयी प्राण पीड़ा, कब्र में उनका दफन और मृतकों में से उनका पुनरुत्थान की ऐतिहासिक सत्य घटनाओं का भावपूर्ण स्मरण करते हुए उसे आत्मसात् भी करते हैं। इसके साथ ही प्रभु के आदेशों को अपने जीवन में व्यवहारिक बनाने के लिए मसीही समाज कई अन्य साधनों जैसे- परहेज़, दान-पुण्य, मदद, बाइबिल-अध्ययन, मनन-चिन्तन करते और पड़ोसी और ईश्वर के प्रति अपने सम्बन्धों की जाँच भी करते हैं और स्वयं में सुधार लाने के लिए शारीरिक, मानसिक, आत्मिक व्यवहारिक प्रयास करते हैं।

चालीसा काल हमें आत्मिक मनन-चिन्तन के लिए चालीस दिन देता है; यह अवधि अपनी मसीही दिनचर्या को समझने, जानने और समझने के लिए काफी है। इन दिनों हम संयमित जीवन जीने के लिए ही 'उपवास' रखते हैं। मसीही विश्वास भी है कि, उपवास के साथ की गयी प्रार्थना परमेश्वर से सीधा सम्पर्क करने में बड़ी सहायक होती है।

उपवास अवधि में प्रत्येक विश्वासीजन की स्वतंत्रता पर भी विशेष महत्व दिया जाता है। नबी योएल अध्याय 2 के 12वें पद में सम्पूर्ण यहूदी जाति से उपवास व प्रायश्चित करने का आह्वान करते हैं। (वर्तमान में ऐसा नहीं है) उपवास रखने के नियम- विनियम में दबाव, अनिवार्यता जैसी कोई मानसिकता नहीं होती है। प्रत्येक विश्वासी स्वेच्छा और प्रभु येसु से प्रेरित होकर उपवास रखता है। फिर भी नि:संदेह प्रभु येसु के अनुयायी इस बात के लिए बाध्य हैं कि वे अपने प्रभु का अनुकरण करें, और उसके आदर्श को धारण कर, उसी के बताए मार्ग पर चलें व उसी के समान बनें। लेकिन यह भी छूट है कि विश्वासीजन अपनी परिस्थिति, समय और कलीसिया की माँग को ध्यान में रखकर अपने ढंग से उपवास व परहेज रखने के लिए स्वतंत्र हैं। प्रभु का वचन कहता है कि प्रभु येसु और मसीहीजन में आपसी एकता अधिकारिक दृढ़ता के साथ झलके। प्रभु ने कहा- ''जैसा मैं पवित्र हूँ वैसे ही तुम भी बनो।''

मित्रों! अब सवाल उठता है कि जब हम प्रभु येसु की सबसे बड़ी आज्ञा 'पड़ोसी प्रेम' पर तो रंचमात्र भी नहीं चलते हैं तो फिर प्रभु येसु की भाँति चालीस दिन भूखे-प्यासे रहने की घटना को इतने शिद्दत से क्यों दोहराते हैं? कहीं ऐसा तो नहीं मसीह के अनुसार हम सौंफ और ज़ीरे का दशमांश बड़े जोर-शोर से देते हैं लेकिन ऊँट को निगल जाते हैं? यानि असली आदेशों को मानने में लापरवाह तो नहीं हैं?

मित्रों! आइए जानें कि उपवास कब, क्यों और किस लिए रखें?

संत मत्ती अध्याय 9 की 15वीं आयत में स्पष्ट लिखा है- ''क्या बाराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है; शोक कर सकते हैं? परन्तु वे दिन आयेंगे जब दूल्हा उनसे अलग कर दिया जायेगा, तब वे उपवास करेंगे।''

सोचिए जब हमारा प्रतिदिन का आहार परमेश्वर की ही बाते हैं, जो हमारी आत्मा को परिपोषित करता है या जब तक हमारी आत्मा से परमेश्वर की बातें 'वचन' निकलते रहेंगे हम 'उपवासी' नहीं कहलायेंगे, लेकिन दूल्हा (प्रभु परमेश्वर) अर्थात् वचन हमारे जीवन से

अलग हो जाता है या हम प्रभु से दूर हो जाते हैं; हमें जब प्रतिदिन का आहार नहीं मिल रहा होता है, तब हम एक प्रकार से 'उपवासी' ही रहेंगे। तो बताइए! हमें जीवन की रोटी से से तृप्त होना उचित है या उपवास रखना?

उपवास कैसे करें?- संत मत्ती अध्याय 6:16-18 पद में लिखा है- ''जब तुम उपवास करो तो कपटियों के समान तुम्हारे मुख पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुँह बनाए रखते हैं ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें।'' परन्तु प्रभु येसु ने कहा वे अपना प्रतिफल पा चुके; लेकिन जब तुम उपवास रखो तो अपने सिर पर तेल मलो और मुँह धो लो ताकि लोग नहीं, तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रतिफल दे।''

जी हाँ! हम उपवास रखें तो हमारे मन मलिन क्यों हो उपवास तो परमेश्वर से जुड़े रहने का सशक्त साधन है। प्रभु से एकाग्र होने पर हमारे मुख पर प्रसन्नता की चमक होनी चाहिए। वैसे भी उपवास हमारा व्यक्तिगत मामला है इसका दिखावा क्यों?

उपवास किस लिए करें- प्रेरित चरित अध्याय 13 पद संख्या 2-3 में उपवास सहित प्रार्थना पर बल दिया गया है। प्रभु येसु के चेले उपवास रखकर प्रार्थना के साथ ही अपना कार्य प्रारम्भ करते थे और एक दूसरे को मिशन कार्य के लिए विदा करते थे। प्रभु येसु के अनुयायी होने के नाते हमें भी उनका अनुसरण करना चाहिए। नबी योएल भी कहते हैं- ''उपवास के दिन होने चाहिए ताकि हम शैतानी विपत्तियों में न पड़ जाए; दूसरों को भी उपवास के लिए प्रेरित करना चाहिए।''

मित्रों! उपवास का अर्थ केवल भूखा रहना ही नहीं वरन् हर प्रकार की परीक्षाओं को पार करना भी है। उपवास इस तरह भी किया जा सकता है जैसे-

- एक दूसरे को क्षमा करना, बदला न लेना।
- अपना भोजन या वस्तु जरूरतमन्द के साथ बाँटकर
- दया, करूणा, भलाई के कार्य करते हुए।
- जिह्वा, मस्तिष्क को अर्नगल बातों से रोककर।
- हम बाह्य और आंतरिक रूप से किसी का अनर्थ न करें। किसी के हृदय को चोट न पहुँचाए।
- अपने पापों पर पश्चाताप कर सच्चे मन से प्रभु के पास आएं।
- हर प्रकार से संयमित आचरण करें। परमेश्वर के दस नियमों के आधार पर जीवन बिताने का दृढ़ संकल्प लेकर।
- चालीसा काल ही नहीं आगे भी इन पर चलकर क्योंकि नबी यशायाह भी यही कहते हैं कि- ''जैसा उपवास तुम आजकल रखते हो; उससे तुम्हारी प्रार्थनाएं ऊपर सुनाई देती हैं। जिस उपवास से ईश्वर प्रसन्न होता है। वह है- ''स्वयं को दीन-हीन करना।'' (यशायाह 58:4-7)

सच्चा पश्चाताप करें- ''अपने वस्त्र फाड़कर नहीं वरन् अपने मन फाड़कर परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो; क्योंकि, वह अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से क्रोध करने वाला करूणामयी परमेश्वर है।'' (योएल 2:12-14)

तो मित्रों! दीन-हीन विनम्र दयालु और पड़ोसी-प्रेमी बनिए। इस प्रकार आपका उपवास भी पूरा हो जायेगा।

—निशी अगस्टीन
कथीड्रल पल्ली, आगरा

A Short Moral Story

"One day, a young boy asked an old man, "Sir, which is the best day to pray? The wise old man replied, "My son, the best day to pray is the day before you die."

The boy was astonished and replied, "Sir, how can I know the day of my death? Essence of inspirational wisdom and the old man answered, "Nobody knows the day of his death, that's why we need to pray everyday."

JESUS AND ME

In a dream Jesus came to me to search fruit on me. He found nothing. What should I say? I have nothing to say. So, as if I got a piece of hay in the drowning water, I asked Jesus "you came in off-season and searching fruit on me now, how is it possible?" He shouted, "you liar, another Adam, blaming others and cutting excuses with one reason or the other." I said "No Jesus, I am at your service, going to the church, receiving you in my heart and helping the Parish Priest every day". Jesus said, "No, no. It is a showy, only showing the people. You are like a tree standing on the bank of a river well rooted and fertilized having thick green leaves. These are only to show and to attract the people. But when they come to you, you have no fruit produced to give to them. So I decided to curse you. Why you should be a waste in my garden?".

Suddenly, the Arch Angel, the protector came for my help as a Gardener and suggested, "Lord let him be one more year. In the meantime, I shall till the soil, put some manure in it and to give a proper dressing. If he doesn't produce any fruit by your next visit, then we can cut it off and throw into the fire. Jesus, being merciful, accepted this suggestion. I asked Jesus,"Lord, If I may not produce 50 fruits, will you accept 45. He agreed and told even if you produce 40 I will be glad. Again I went for 35 and bargained till 2 like Abraham. He agreed, being kind, assured me that even you produce one fruit till my next arrival, I would be happy and pleased on you. The following praises, came from my heart at once spontaneously and I uttered, "Oh Lord, My God!, Thankyou Lord!, Praise you Lord, All Glory to you God! Alleluia! etc" The Arch Angel immediately took me to the Kolkata Peerless Research Institute, a five-star hospital, removed all my broken and weakened heart valve, and put the best and new one by carrying out a by-pass surgery, well cured and put me back in His garden. I was happy like anything. Now it is my prime duty to produce fruit atleast one for my Lord Jesus Christ. So please pray for me. Alleluia!

Dr. Alexander Joseph
Port Blair, Andaman & Nicobar Islands, India

DATES TO REMEMBER (MARCH)

03	B.D.	Fr. Tony D'Almeida	22	O.D.	Fr. Jose Akkara
07	B.D.	Fr. Vineesh Joseph	23	B.D.	Fr. Andrew Correia
11	B.D.	Fr. Louis Xess	26	B.D.	Fr. Pasala Joseph Kumar
15	B.D.	Fr. Robert Varghese	30	O.D.	Fr. Thomas K.K.
17	B.D.	Fr. Vinoy P.M.	30	O.D.	Fr. Shibu Kuriakose
19	O.D.	Fr. Alwyn Pinto	30	O.D.	Fr. Stany Rodrigues
19	O.D.	Fr. Ignatius Miranda	30	O.D.	Fr. Suresh D'Souza
22	D.A.	Fr. Jose Muttath	30	O.D.	Fr. Sunil Mathew

आओ हम आत्माएं बचाएं!

2 मार्च 2022 से हम सब दु:खभोग काल में प्रवेश कर चुके हैं। इस अवधि के दौरान हमें अपने को सोने की तरह आग में तपाकर दान-दक्षिणा, उपवास, परहेज, प्रार्थना द्वारा आत्माओं को बचाने का सुनहरा अवसर है। आज संसार जिस गति से विनाश की ओर आगे बढ़ रहा है, उसकी दोगुनी ताकत से हमारे लिए आध्यात्मिकता प्राप्त करने का समय है। किन्तु यह तभी सम्भव है, जब हम सब नबियों और प्रभु ईसा मसीह के पद-चिह्नों पर चलें।

प्रभु ईसा मसीह के समय जितने लोगों ने विश्वास के साथ उनसे अनुनय-विनय की, कि उनके असाध्य रोग ठीक हो जायें, उनके विश्वास के कारण प्रभु ने उनको चंगाई प्रदान, की फिर चाहे वो कोढ़ी रहा हो या फिर अर्द्धांग रोगी अथवा फिर मृत लाज़रूस को जीवनदान। प्रभु ईसा मसीह ने असंख्य लोगों की आत्माओं को नरक की आग में जाने से बचाया। आज भी अपने धर्मी लोगों के द्वारा पवित्र आत्मा के नेतृत्व में आत्माओं को बचाने का कार्य अनवरत जारी है।

सब बपतिस्मा संस्कार द्वारा ईश्वर की सन्तान तो बन गये हैं और प्रभु ने हमें फर्श से अर्श तक भी पहुंचा दिया, क्या हम सबका नैतिक फर्ज नहीं बनता, कि हम प्रभु को उसका कुछ प्रतिशत लौटाएं। ईश्वर हम से न तो सोना-चाँदी, हीरा-मोती या धन-सम्पत्ति चाहता है न ही कोई अमूल्य वस्तु। प्रभु हम से चाहता है कि हम पाप के गर्त में पड़े हुए लोगों की आत्माओं को बचायें।

प्रभु ने हमें सान्तवना एवं नैतिक मूल्य देकर शारीरिक, मानसिक रोगों से आजाद किया। यह हमारा फर्ज कि हम सच्चे ख्रीस्तीय अनुयायी होने के नाते विभिन्न पापों में पड़े हुए लोगों की आत्माओं को बचायें।

हम सब के दिलो-दिमाग में यह प्रश्न बिजली की तरह जरूर कौंध रहा होगा, कि आत्माओं को बचाने का क्या आशय है? हम आत्माओं को कैसे बचा सकते हैं?

हमारा यह सोचना जायज एवं अति महत्वपूर्ण है कि हम सब लोगों की आत्माओं को नरक की न बुझने वाली आग में जाने से बचा सकते हैं। पापों में पड़े हुए व्यक्ति को उसके पापों के दुष्परिणाम बताकर उसको आगाह करना होगा। यदि समय रहते हम सबने यह पुनीत कार्य कर लिया, हम सब ईश्वर के पुत्र-पुत्रियाँ कहलाने का मुकुट हमें अवश्य प्रदान किया जायेगा। हमारे दैनिक कार्यों की सूची में एक नया कार्य जुड़ जायेगा।

हमने प्रभु ईसा मसीह को ग्रहण करने से पूर्व न जाने कितने वादे प्रभु से किये थे। जब ईश्वर ने हमें स्वीकार कर अपने पुत्र-पुत्रियाँ बनने का दर्जा देकर धन-सम्पत्ति, नौकरी-पेशा और समाज की मुख्य धारा में शामिल कर लिया तो क्यों हम अभी भी गरीब, बीमार, लाचार, बेरोजगार एवं शारीरिक रूप से कमजोर एवं नगण्य लगने लगते हैं। प्रभु ईसा मसीह हमारे पाप हरने के लिए एक ही बार अर्पित हुए। क्या इसके लिए बेरोज़गारों, बीमारों को चिकित्सा की सुविधा देकर अपने आपको अर्पित नहीं कर सकते?

यदि हम आत्माओं को बचाने के इतर जीवन जियेंगे तो हमें अमीर और लाज़रूस का दृष्टांत अवश्य पढ़ लेना चाहिए। (संत लूकस 16:19)

यदि हमने चाहकर भी किसी के दबाव में आकर आत्मा को नहीं बचाया है तो हम पश्चाताप कर पुन: ये कार्य बड़ी आत्मीयता से प्रारम्भ कर सकते हैं- ''लेकिन, तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो सबके सब उसी तरह नष्ट हो जाओगे।'' (लूकस 13:5)

यदि हम यह सोचकर धन-सम्पत्ति का सग्रंह करते हैं कि भविष्य में हमारी संतान तथा सम्पत्ति हमारे बुढ़ापे के काम आयेगी तो हम गलत सिद्ध होंगे, यद्यपि कोरोना काल के समय तो यह तस्वीर पलट ही गई है। कभी-कभी

हमारे दिमाग में यह बात घर कर लेती है कि धन-सम्पत्ति तो मेरी है मुझे दूसरों से क्या मतलब?

क्या हम अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विधाता पर विश्वास करना भूल गये हैं- ''प्रभु येसु ने अपने शिष्यों से कहा, ''चिन्ता मत करो-न अपने जीवन निर्वाह की, कि हम क्या खायें और न अपने शरीर की, कि हम क्या पहनें; क्योंकि जीवन भोजन से बढ़कर है। आकाश के पक्षियों को देखो उनके न तो भण्डार हैं न बखार। फिर भी ईश्वर उन्हें खिलाता है।''

यदि हम अपने जीवन काल में दस आत्माओं को भी नरक में जाने से बचायेंगे तो धर्मग्रन्थ का यह कथन आत्मसात् होने में देर न लगेगी- ''प्रभु का आत्मा मुझ पर छाया रहता है क्योंकि उसने मेरा अभिषेक किया है जिससे मैं दरिद्रों को सुसमाचार सुनाऊँ, बंदियों को मुक्ति का और अंधों को दृष्टादान का संदेश दूँ- दलितों को स्वतंत्र करूँ और प्रभु के अनुग्रह का वर्ष घोषित करूँ।''

यदि हम सच्चे ख्रीस्तीय बनकर नहीं रहेंगे और केवल अपने और अपने घर-परिवार की चिन्ता में लगे रहेंगे तो याद रखिए- ''...उन दिनों ऐसा घोर संकट होगा, जैसा ईश्वर की दृष्टि में, इस संसार के प्रारम्भ से अब तक कभी नहीं हुआ है।'' (मारकुस 13:19)

जिस तरह मनुष्यों के लिए बार-बार मरना और इसके बाद न्याय होना निर्धारित है उसी तरह मसीह बहुतों के पाप हरने के लिए एक ही बार अर्पित हुए। (इब्रा. 9:27)

कभी-कभी मन में ख्याल आता है, कि हम फलाँ व्यक्ति को समाज की मुख्यधारा में लाने हेतु प्रयासरत तो होते हैं, लेकिन दूसरी तरफ मन में ख्याल आता है, उसमें तो कोई सुधार नहीं आ सकता, तो मैं अपनी ऊर्जा को क्यों व्यर्थ नष्ट करूँ? यहाँ पर शैतान हमारे धैर्य एवं विश्वास को छूमंतर कर देता है। क्या आप जानते हैं कि ''इब्राहीम ने बहुत समय तक धैर्य रखने के बाद प्रतिज्ञा का फल प्राप्त किया।'' (इब्रा. 6:15)

प्रभु ईसा मसीह ने चार दिनों से मृत लाज़रूस को जीवनदान देकर उसकी आत्मा को बचाया।

यह गूढ़ सत्य है कि पवित्र आत्मा से भरा हुआ एक ख्रीस्तीय विश्वासी अपने जीवन काल में सैंकड़ों आत्मओं को नरक की आग में जाने बचा सकता है। यह कार्य तभी सम्भव है जब हम प्रभु की आज्ञाओं को मानें एवं अपने प्रभु ईश्वर से सर्वाधिक प्रेम करें। प्रभु से प्रेम करने से आशय है आत्माओं को बचाने हेतु जीवन के प्रत्येक क्षण तत्पर रहना।

यदि हम आत्माओं को बचायेंगे तो प्रभु के सामने कहने के हकदार होंगे,- ''जो कार्य तूने मुझे करने को दिया था, वह मैंने पूरा किया है।'' (योहन 17:4)

यदि हमने यह पुनीत कार्य जान-बूझकर नहीं किया या पक्षपात का रवैया अपनाया तो हमारी आत्मा नरक के द्वार पर इंतजार कर रही होगी, जहाँ उनमें पड़ा हुआ कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। (मारकुस 9:48)

यदि हम सब समय रहते नहीं चेते तो मानव पुत्र के आगमन के समय हमारे मुखमण्डल से एक भी शब्द नहीं निकलेगा। वहाँ पर हम सब मूक दर्शक बने रहेंगे। अब तो संसार में युद्ध के ट्रेलर से तो यही आभास होता है कि ''प्रभु येशु का द्वितीय आगमन।'' जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही मानव पुत्र का आगमन होगा। (मत्ती 24:27)

यदि हम भले कार्य करेंगे, जैसे कि किसी का नशा छुड़ायेंगे तो हो सकता है लोग आप पर हंसें या पागल की उपाधि प्रदान कर दें, आदि। हमें आत्माओं को बचाने की खातिर यदि मूर्ख भी बनना पड़े, तो खुश रहो और आनन्द मनाओ धर्मग्रन्थ का यह कथन याद रखना- ''ज्ञानियों को लज्जित करने के लिए ईश्वर ने उन लोगों को चुना है, जो दुनिया की दृष्टि में मूर्ख हैं। शक्तिशालियों को लज्जित करने के लिए उसने उन लोगों को चुना है, जो दुनिया की दृष्टि में दुबले हैं। गणमान्य लोगों का घमण्ड चूर करने के लिए उसने उन लोगों को चुना है जो दुनिया की दृष्टि में तुच्छ और नगण्य हैं। (कुरिन्थियों के

नाम पहला पत्र 1:27)

यदि हम आत्माओं को नहीं बचायेंगे तो हम अपने आपको नरक की आग में जान बूझकर झोंक रहे हैं। हमारा जीवन खाने पीने का नहीं, वरन् लोगों की अधिकाधिक सहायता करके उनकी आत्मा को नरक की भट्ठी में जाने से रोकना है। इस पृथ्वी पर रहते समय हम सब मनमानी कर सकते हैं परन्तु यहोवा परमेश्वर के इकलौते पुत्र प्रभु ईसा मसीह के सामने नहीं। वहाँ कोई पाप क्षमा संस्कार नहीं होगा। यदि हम यह सोचते हैं; कि खाओ पीओ मौज करो, मुझे दूसरों से क्या मतलब? तो हमारा प्रभु येसु को ग्रहण करना व्यर्थ हो सकता है।

आत्माओं को बचाने हेतु पहले हमें लोगों को प्रभु का सुसमाचार सुनाना, बीमारों की सहायता करना, भूखों को खिलाना, बेघर लोगों को आश्रय देना, विभिन्न पापों में पड़े हुए लोगों को भाईचारे के साथ सहानुभूति रख कर सुधारना। गम्भीर से गम्भीर पाप में पड़े हुए को सहारा देकर सुधारना चाहिए।

मोहनसिंह (जैतवाल), सेंट फ्रांसिस चर्च, हाथरस

चींटी

सजती हूँ, सँवरती हूँ,
हर रोज़ काम पर निकलती हूँ,
अपने से ज्यादा बोझा ढोती हूँ,
चींटी हूँ मैं...
मुझे न आँधी रोक सकती है,
और न बारिश मैं तो बस अपनी धुरी पर चलती हूँ
और सबसे आगे निकलती हूँ
चींटी हूँ मैं...
मैं दूर से खतरे को भाँप जाती हूँ
और फिर हर काम को
अंजाम तक पहुँचाती हूँ
चींटी हूँ मैं...
मेरी मंज़िल, मेरी मेहनत तय करती है,
और मेरी मेहनत, मेरी किस्मत बदलती है।
चींटी हूँ में...

हारना, थकना, निराश होना
मेरी आदत में नहीं है।
पर जीत का परचम लहराना ही
मेरी काबिलियत का परिचय है।
चींटी हूँ मैं...

अंजलीना मोसस
संत जूड पल्ली, कौलक्खा, आगरा

Honour and Love your Elderly Parents

A son took his old father to a restaurant for an evening dinner. The father being very old and weak, while eating, dropped food on his shirt and trousers. The other diners watched him in disgust while his son was calm.

After he finished eating, his son who was not at all embarrassed, quietly took him to the washroom, wiped the food particles, removed the stains, combed his hair and fitted his spectacles firmly. When they came out, the entire restaurant was watching them in dead silence, not able to grasp how someone could embarrass themselves publicly like that. The son settled the bill and started walking out with his father.

At that time, an old man amongst the diners called out to the son and asked him, "Don't you think you have left something behind?".

The son replied, "No sir, I haven't".

The old man retorted, "Yes, you have! You left a lesson for every son and hope for every father". The restaurant went silent.

Moral: To care for those who once cared for us is one of the highest honors. We all know, how our parents cared for us for every little thing. Love them, respect them, and care for them.

Vendors : Strangled by poverty

There are many vendors living from hand to mouth. Life is a grim struggle for the vendors. They go to market places, streets, with great hope come back home very often with a broken spirit, when things are not sold. Their voices are chocked with emotions, not knowing what to feed their family. Can't imagine their plight.

We have not heard the groans or moans of the affected vendors. We have not read the pain & suffering in the eyes of the bread winner.

When it rains, vegetables or fruits get wet and are spoilt, they either eat or throw them away.

For the hawkers, the vendors and all those people of different trades, who earn a living on pavement, a really wet day means no business. They cannot earn their daily bread. Their families starve. What are they to do? They cannot help it. They have more misery to be faced. They get frustrated, this is exactly how a vendor feels when he tries hard & have to go home empty handed with no money, his mental worries increases. He considers himself worthless. They go crazy when things are not sold, when people come and look they have high hopes that people will buy, but in vain, their heartbeats, you can't imagine their desperation. Their problems send many of them to the grave before they are due.

The life of the struggling poor is unimaginable. There are many who work hard during the day even at night who work on machine for hours for shoe making. People suffer different problems of poverty. Let's be grateful to God for all the blessings He bestows on us day to day. Let's give an ear to the poor & needy.

Sr. Marina Soares SHM
St. Jude's Church, Kaulakha, Agra

YOU ARE THE MAN

1. I can't but bow before the Almighty,
   For the great courage of Prophet Nathan.
   To care front the king, David the mighty ever
   To reveal the truth the king had hidden
2. Well prophet Nathan had an interesting story
   Which the great king listened very keenly.
   As we know the rich man, unjust and greedy
   He killed the poor man's only lamb unkindly.
3. Of course the king ever known for his justice
   Rose in anger from his
   prestigious royal throne,
   He roared, "Justice will be done
   without delay
   The culprit return the loss fourfold
   and be killed"
4. **'You are the man',** Nathan sternly
   pointed towards
   The king who was wonder stuck
   at those few words,
   Broke into tears as he confessed,
   "I have sinned, Lord!
   Have mercy on me. You chose me
   as the king of Israel!"
5. Death sentence he didn't utter
   unto Nathan yet
   And David enjoyed the favor
   of the Lord ever.
   Cause his repentance for his
   injustice and iniquities
   Yes, error is human, but repentance is divine.

Sr. Thelma, UMI, G. Noida

प्रभु येसु का महा दु:खभोग

हम सभी जानते हैं कि येसु ने हमारे गुनाहों की खातिर जान दी। इन चालीस दिनों में हम उनके दु:ख को याद करते हैं। प्रभु येसु ने पुण्य बृहस्पतिवार को अंतिम भोजन अपने शिष्यों के साथ किया। उस समय से ही उनका दु:खभोग शुरु हुआ। हर प्रकार का दु:ख जो उन अंतिम क्षणों में प्रभु ने झेला। गेथसेमनी की बारी से वो अकेलेपन का दु:ख, जब वो आने वाली परीक्षा को जानते थे और चाहते थे कि उनके शिष्य उन अंतिम क्षणों में भी उनके साथ प्रार्थना करें, पर शिष्य उदासी के कारण सो गये। वो पहला दु:ख अकेलेपन का, दूसरा दु:ख विश्वासघात का जो यूदस ने दिया। प्रभु के ही एक शिष्य ने जब चंद सिक्कों में अपने गुरु और प्रभु को बेच दिया। किसी अपने से ही विश्वासघात का दु:ख, याजकों, शास्त्रियों ने पिलातुस के सामने जब झूठे इल्जाम प्रभु पर लगाये, झूठी गवाही उनके विरुद्ध देने लोग सामने आये, उन झूठे इल्जामों और गवाहियों के साथ।

जब पेत्रुस ने तीन बार प्रभु को इंकार किया, उस इंकार का दु:ख। अपमान, निंदा, कोड़ों की मार, क्रूस का बोझ वो सब कुछ अपार दु:ख जो प्रभु ने हमारे लिए झेला।

पवित्र क्रूस पर से अपनी माँ को देखना, जब माता मरियम अपने इकलौते पुत्र के कारण शोकित थी, व्याकुल थी। वो असीम दु:ख जिससे बेटा अपनी माँ को अपने सामने रोते बिलखते देखता रहा। अंतिम समय तक अपमान निंदा से भरे शब्द, असहनीय शारीरिक पीड़ा और क्रूस के पास रोती बिलखती माँ और यह सारे कष्ट, दु:ख झेलने के बाद मृत्यु! मृत्यु भी वो जो उस समय के अनुसार एक शापित मृत्यु थी।

प्रभु येसु ने वो हर एक दु:ख और पीड़ा को अनुभव किया जो कभी-कभी हम भी सहते हैं। कभी अकेलापन, कभी विश्वासघात, कभी किसी अपने का हमसे इंकार, बेइज्जती, झूठे इल्जाम, अन्याय, अत्याचार आदि। कोई ऐसा दु:ख नहीं जो हमारे मसीह ने हमारे लिए न सहा। इसीलिए पवित्र शास्त्र कहता है कि वह स्वयं परीक्षा में पड़ा इसीलिए हर एक परीक्षा में पड़ने वालों की वो सहायता कर सकता है। हमारा कोई भी दु:ख प्रभु से अनजान नहीं है, पर हमसे अनजान है। उसकी दया, उसकी क्षमा हमारे अविश्वास के कारण जो शान्ति, दया, क्षमा, प्यार, छुटकारा प्रभु ने हमारे लिए मोल लिया। हम अपने अविश्वास अपने मन की कठोरता के कारण उसे हासिल नहीं कर पाते।

आइये, प्रार्थना करें कि हम प्रभु येसु के दु:खभोग को सिर्फ एक रीति (परम्परा) की तरह याद न करें वरन् उस दु:खभोग पर मन, आत्मा और विश्वास से मनन करें कि उसके पुण्य फल हमारे जीवन में हम पायें। उस दु:खभोग की शक्ति अपार है, वो एक नये युग का आरम्भ है और उस युग की परिपूर्णता अपने चरमोत्कर्ष पर तभी पहुंच पायेगी जब हर घुटना उसके नाम में झुकेगा, हर वाणी बोलेगी, येसु ही प्रभु है।

डॉ. डेज़ी, पादरी टोला, आगरा

"I want mercy not sacrifice"

"O God you show your power especially by granting pardon". People recognized Christ because He remitted sin that was the good news, the meaning of His advent; Go tell everyone his sins can be forgiven Jesus is essentially the savior. Where there's much sin there's even more grace. He came, not to abolish the sin, but to forgive it; I have come for sinners He used to say not for the righteous.

Those who couldn't tolerate such mercy rejected him. We don't know what God's doing or what we're doing either we shouldn't however virtuously, bewail Adam's sin but deplore the way we tirelessly persist in ours. The first thing the Holy Spirit does in us says Jesus is to convince us of our sinfulness. Listening our sins is meaningless unless we're gratefully recalling how we've just broken the bonds that held us and are asking the priest to attest to our new freedom. Through the words of absolution, God is simply saying, I love you. I've wanted to forgive you right along and I' m even happier to grant you pardon than you are to receive it. My son was dead, and now he's come back to life again. Let there be a big feast. Each confession we make applies the redemption to us personally and instantly. For all Christians, confession is an essential part of our walk with Christ, as humans, we are sinners, but GOD asks us to be aware of our sin and with his help, continually turn from those sins and do better. When we confess our sins to a priest in the sacrament of reconciliation, we are assured of GOD'S forgiveness. Confession also strengthens a person's sense of empowerment you feel less helpless, less hopeless, less negative about yourself. This is true depending on whether or not your confession is followed by self -punishment and recrimination, or by self-forgiveness and acceptance. As we are in the season of lent we also in the flat form of fasting from food and making unanimous sacrifices but one thing we forget to be a human first we have to be a human and then can strive to become divine what are the ways that I can fast in life to become better person in the season of lent. As it follows

- Fast from hurting words and say kind words.
- Fast from sadness and be filled with gratitude.
- Fast from anger and be filled with patience.
- Fast from pessimism and be filled with hope.
- Fast from worries and trust in GOD.
- Fast from complaints and contemplate simplicity.
- Fast from pressures and be prayerful.
- Fast from bitterness and fill your heart with joy.
- Fast from selfishness and be compassionate to others.
- Fast from grudges and be reconciled.
- Fast from words and be silent so you can listen to others.

Nothing is so false as defining ourselves in terms of our activity, identifying ourselves with what we do. There's big difference between us and our actions; we're worse than the good we do and better than the bad.Genuine sincerity's a willingness to make something of ourselves and not accept ourselves ready-made. The holiness is like humility - the moment we think we have it we lose it. To be a Christian means to feel as uncomfortable in sin as in virtue.

Sr. Shalini
Satyaseva Convent, Agra

Mother Anna Huberta: A Splendor of Light

Mother Anna a gift of Jesus Christ
Called to be a follower of Christ
Zealous follower of Jesus Christ
Her passionate love for Jesus Christ
Once Lord Jesus touched her heart
She worked for Christ, with all her might
Grace of the spirit within her guided her life.

Her only zeal was missionary life
Loving the poor far and wide
Proclaiming Christ with a zealous heart
She gave to the sisters the Gospel of Christ
She taught them to lead a righteous life
The power of God radiated her life
She was a living flame of love of Jesus Christ

Mother had a charisma of her own
A vision and mission given by God
She unfolded in her life and work
Mothering the homeless and the lost
The least and the dying found a home
Where love and care they did find
She brought true joy and hope into their lives

You must live like the poor
Spend your lives for the lost and the least
Let kindness radiate through your life
Dare to go where no one goes

Spend every moment of your life
Serving the uncared and the sick
Have no fear my Marys
You are deep in His love
She lived her faith to the very end
Proclaiming Christ in challenging times
Devoured by love for Jesus Christ
Worked ceaselessly for Jesus Christ
Mother Anna a model for all Helpers
Inspiring us all, to live for love
She brought great hope and love into human life.

Mother Anna made herself all things to all
The power of God was in her call
She boasted of nothing but the love of Christ
Her undying love for Jesus Christ
Her life was rooted in Jesus Christ
So ardent was her love for Jesus Christ
Mother Anna now shines in Christ as a splendor
Of light. As a splendor. **-Sr. Marina Soares**

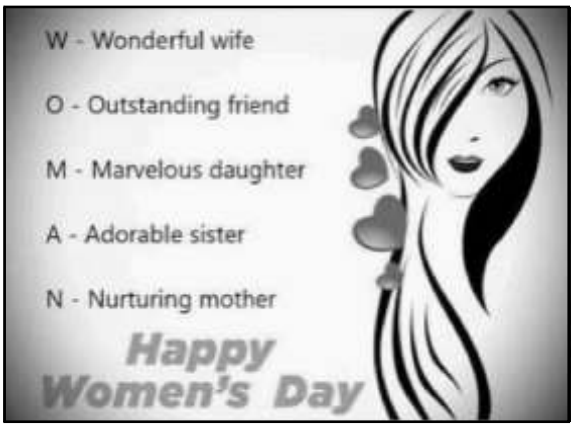

पवित्र चालीसा काल के दौरान

आध्यात्मिक साधना व करिश्माई नव जागरण

1-3 अप्रैल, 2022 प्रतिदिन सायं 5.30 बजे से

वक्तागण:

फादर इसीडोर डिसूज़ा, फादर विपिन डिसूज़ा एवं फादर अनिल एब्रू (इलाहाबाद धर्मप्रांत)

—: स्थान :—

निष्कलंक गर्भागमन महागिरजाघर

वज़ीरपुरा रोड, आगरा

जीवन की राह है, नारी!

वह जीवन की राह है, वह खुशियों की चाह है
वह दर्द में डूबी आह है, वह निशब्द कराह है
वह जमाने की चाह है, वह हर दिल की पनाह है
वह कहती है दाह है, वह सदियों से तबाह है
वह हरेक की सलाह है, वह नदी का प्रवाह है
वह सृष्टि का प्रवाह है, वह जीवन की राह है।

विभिन्न रूपों में सृष्टि का निर्वाह करती मानव जननी है नारी, प्रार्थना, विनय, करूणा, ममता के उत्कृष्ट भाव, उसकी छवि के प्रसार तत्व हैं।

दु:खद स्थिति यह है कि विकास के दौड़ में पुरुषों से भी आगे निकलती महिलाएं आज भी अपने अस्तित्व के लिए तथा सम्मान की रक्षा के लिए संघर्ष कर रही हैं।

8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने से ही महिलाओं के प्रति हमारे कर्तव्य पूरे नहीं होते। हमें समझना होगा कि कोई भी समाज सच्चे अर्थों में तभी विकास कर पाएगा, जब हम महिलाओं को सम्मान तथा सुरक्षा देकर उसे विकास की मुख्य धारा में जुड़ने का अवसर प्रदान करेंगे।

8 मार्च 2013 को संत जोसफ चर्च, ग्रेटर नोएडा ने क्रूस रास्ता के प्रत्येक पड़ाव को महिलाओं के प्रति समर्पित करके, विश्व भर की महिलाओं के लिए प्रार्थना की। आइए हम सब भी महिलाओं और उनके स्वप्नों को प्रभु के चरणों पर अर्पित कर दें।

सिन्धु थॉमस
उर्सुलाइन कॉन्वेण्ट, ग्रेटर नोएडा

महिला शक्ति

जीवन की इस भाग-दौड़ में,
जब हम थक कर चूर हुए,
तब यदि एक हाथ,
एक गिलास पानी का लेकर,
अनायास सामने आया,
तो जान जाओ,
यही है, माँ का साया।
वो घर सम्भालती है, वो नौकरी भी करती है
वह हर रूप में अपनी काबिलियत का लोहा मनवाती है
तभी तो वह नारी-शक्ति कहलाती है
उसी से सारी कायनात की शुरुआत होती है
वह शक्ति का रूप है, वह संयम की देवी है
तभी तो वह जन्म से जननी कहलाती है
वह धैर्य और क्षमा की मूर्ति है
वह स्वभाव से दयालु है
वह प्राण वायु फूंकने वाली
ईश्वर-तुल्य है।
तभी तो उसका जीवन
मानव जाति के बहुमूल्य है।

अंजलीना मोसेस, संत जूड पल्ली, कौलक्खा, आगरा

Mass of the Holy Chrism & Blessing of the Holy Oil
7th April 2022 at 5:00 p.m.
Cathedral of the Imm.Conception
Wazirpura Road, Agra

Saint of the Month

St. Patrick of Ireland

Feast Day : 17 March

St. Patrick, (flourished 5th century, Britain and Ireland; feast day March 17), patron saint and national apostle of Ireland, credited with bringing Christianity to Ireland and probably responsible in part for the Christianization of the Picts and Anglo-Saxons. He is known only from two short works, the Confessio, a spiritual autobiography, and his Letter to Coroticus, a denunciation of British mistreatment of Irish Christians.

His Life: Patrick was born in Britain of a Romanized family. At age 16 he was torn by Irish raiders from the villa of his father, Calpurnius, a deacon and minor local official, and carried into slavery in Ireland. He spent six bleak years there as a herdsman, during which he turned with fervour to his faith. Upon dreaming that the ship in which he was to escape was ready, he fled his master and found passage to Britain. There he came near to starvation and suffered a second brief captivity before he was reunited with his family. Thereafter, he may have paid a short visit to the Continent.

The best-known passage in the Confessio tells of a dream, after his return to Britain, in which one Victoricus delivered him a letter headed "The Voice of the Irish." As he read it, he seemed to hear a certain company of Irish beseeching him to walk once more among them. "Deeply moved," he says, "I could read no more." Nevertheless, because of the shortcomings of his education, he was reluctant for a long time to respond to the call. Even on the eve of re-embarkation for Ireland he was beset by doubts of his fitness for the task. Once in the field, however, his hesitations vanished. Utterly confident in the Lord, he journeyed far and wide, baptizing and confirming with untiring zeal.

Careful to deal fairly with the non-Christian Irish, he nevertheless lived in constant danger of martyrdom. The evocation of such incidents of what he called his "laborious episcopate" was his reply to a charge, to his great grief endorsed by his ecclesiastical superiors in Britain, that he had originally sought office for the sake of office. In point of fact, he was a most humble-minded man, pouring forth a continuous paean of thanks to his Maker for having chosen him as the instrument whereby multitudes who had worshipped "idols and unclean things" had become "the people of God."

The phenomenal success of Patrick's mission is not, however, the full measure of his personality. Since his writings have come to be better understood, it is increasingly recognized that, despite their occasional incoherence, they mirror a truth and a simplicity of the rarest quality. Not since St. Augustine of Hippo had any religious diarist bared his inmost soul as Patrick did in his writings. As D.A. Binchy, the most austerely critical of Patrician (i.e., of Patrick) scholars, put it, "The moral and spiritual greatness of the man shines through every stumbling sentence of his 'rustic' Latin."

It is not possible to say with any assurance when Patrick was born. There are, however, a number of pointers to his missionary career having lain within the second half of the 5th century. In the Coroticus letter, his mention of the Franks as

still "heathen" indicates that the letter must have been written between 451, the date generally accepted as that of the Franks' irruption into Gaul as far as the Somme River, and 496, when they were baptized en masse. Patrick, who speaks of himself as having evangelized heathen Ireland, is not to be confused with Palladius, sent by Pope Celestine I in 431 as "first bishop to the Irish believers in Christ."

Toward the end of his life, he retired to Saul, where he may have written his Confessio. It is said that an angel conveyed to him that he was to die at Saul, the site of his first church, despite his wishes to die within the ecclesiastical metropolis of Ireland. His last rites were administered by St. Tussach (also spelled Tassach or Tassac).

Legends: Before the end of the 7th century, Patrick had become a legendary figure, and the legends have continued to grow. One of these would have it that he drove the snakes of Ireland into the sea to their destruction. Patrick himself wrote that he raised people from the dead, and a 12th-century hagiography places this number at 33 men, some of whom are said to have been deceased for many years. He also reportedly prayed for the provision of food for hungry sailors traveling by land through a desolate area, and a herd of swine miraculously appeared.

Another legend, probably the most popular, is that of the shamrock, which has him explain the concept of the Holy Trinity, three persons in one God, to an unbeliever by showing him the three-leaved plant with one stalk. Traditionally, Irishmen have worn shamrocks, the national flower of Ireland, in their lapels on St. Patrick's Day, March 17.

Courtesy:
Fr. Vineesh Joseph, Mathura

To all women

Be an **Esther**, bold and courageous enough to stand for the truth, to voice your opinion and fight for the good of others, even when it means to sacrifice yourself. If God has put you in a position, it is for a purpose. Never be afraid to heed to that inner voice.

Be a **Ruth**, loyal in all your relationships, walk the extra mile and don't quit when things get tough. Someday, you'll see why it was all worth the effort.

Be a **Lydia**, let your homes be open, let your hands be generous, let your hearts be big enough to help anyone in need. Joy is greatest when shared.

Be a **Hannah**, never cease to pray. It will never be in vain.

Be a **Mary**, humble and submissive. You don't have to be great for God to use you, you just need to obey.

Be a **Dorcas**, use your talents, however small it may seem to bring a smile on someone's face. You'll never know how much it can mean to someone.

Be an **Abigail**, remember how each decision can turn your life around for good or bad. Be wise.

Be an **Elizabeth**, never doubt what God can do. Miracles do happen.

Be a **Mary Magdalene**, never let your mistakes and judgments of other people stop you from experiencing true joy in Jesus.

Be a **Rebekah**, never forget that true beauty lies within. Draw your man closer to God through your character.

Lastly be **Sarah**, age doesn't matter, Trust & believe. All is possible with God.

HAPPY WOMEN'S DAY.

Courtesy: Sr. Rosemary, FSLG

टी.बी., एड्स और कोविड-19 पर नुक्कड़ नाटक आयोजित

आगरा। फातिमा हॉस्पीटल द्वारा आगरा शहर की मलिन बस्तियों में चलाए जा रहे, एच.सी.डी.पी. प्रोग्राम के अन्तर्गत फातिमा हॉस्पीटल की प्रोजेक्ट इंचार्ज सिस्टर जॉली फ्रांसिस के नेतृत्व में सोशल वर्किंग स्टाफ द्वारा कोरोना संक्रमण सम्बन्धी सभी प्रशासनिक निर्देशों का शत-प्रतिशत पालन किया गया। कोविड-प्रोटोकॉल का पालन करते हुए, अपने-अपने कार्यक्षेत्र में बुलाये गये सभी युवकों एवं युवतियों को हैंड सैनिटाइज़र उपलब्ध कराकर सभी को मुफ्त मास्क वितरित किये गये। 13 से 23 दिसम्बर 2021 तक लोगों को टी.बी., एड्स और कोविड-19 जैसी भयंकर बीमारी पर जागरुक करने के लिए 10 नुक्कड़ नाटकों मंचन किया गया, जिसमें लगभग 1400 लोगों ने भाग लिया। इन नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से लोगों को इन बीमारियों के लक्षण, बचाव और इलाज के बारे में जागरुक करके उनसे सम्बन्धित जानकारी दी गई। फातिमा हॉस्पीटल, आगरा अपनी स्थापना के समय से ही समय-समय पर मलिन बस्तियों में जाकर लोगों को बीमारियों के विषय में जागरुक करता रहा है।

—सिस्टर जॉली फ्रांसिस

सेंट जूड चर्च, कौलक्खा में पवित्र बालकपन दिवस मनाया गया

आगरा, 3 फरवरी। सेंट जूड पल्ली, कौलक्खा में बड़े उत्साह के साथ पवित्र बालकपन का पर्व मनाया गया। बच्चों ने पंक्तिबद्ध होकर अपने नन्हें हाथों में मोमबत्तियां लेकर गिरजाघर में प्रवेश किया।

पवित्र मिस्सा समारोह के विभिन्न कार्यों जैसे- मिस्सा पूर्व परिचय, धर्मग्रंथ पाठों का पढ़ा जाना, विश्वासियों के लिए निवेदनों का पढ़ा जाना, चढ़ावा अर्पित करना आदि सभी कुछ बच्चों द्वारा किया गया। पवित्र मिस्सा पल्ली पुरोहित फादर राफी तथा फादर शीजु द्वारा अर्पित किया गया। मिस्सा के उपरांत सभी बच्चों को आशीष दी गई तथा उन्हें स्केप्लर्स भी वितरित किये गये।

— अंजलीना मोसेस, कौलक्खा, आगरा

कथीड्रल पल्ली में पवित्र बालक संघ का पर्व मनाया गया

आगरा, 7 फरवरी। निष्कलंक माता महागिरजाघर में पवित्र बालक संघ का वार्षिक त्योहार पारंपरिक वातावरण ममें मनाया गया। प्रात:काल बड़ी उत्सुकता से बच्चों ने हाथों में गुलाब के पुष्प लिये दो पंक्तियों में जुलूस के

साथ चर्च में प्रवेश किया। वेदी के समक्ष परमेश्वर को पुष्प अर्पित और नमन करते हुए अपने स्थान पर बैठ गये। पवित्र वचन मधुर संगीत व निवेदनों द्वारा बच्चों ने मिस्सा बलिदान में भाग लिया।

पवित्र मिस्सा बलिदान हमारे अतिश्रद्धेय स्वामी जी अल्बर्ट डिसूजा हमारे पल्ली पुरोहित फादर मिराण्डा, फादर विनिवर्सल डिसूजा, फादर एण्ड्रयू कोरिया, फादर जेमिल्टन ने मिस्सा बलिदान चढ़ाया। स्वामी जी ने अपने संदेश में सम्बोधित करते हुए कहा, कि ''पवित्र बालक संघ का उद्देश्य था संसार के सभी बालक-बालिकाएं प्रभु येसु को जानें और उससे प्रेम करें। दूसरा उद्देश्य था कि वे दुनिया में दु:ख सहने वाले बच्चों के लिये प्रार्थना करें तथा उनको आर्थिक सहायता पहुंचायें। पवित्र बालक संघ के अन्तर्गत बच्चे दूसरों बच्चों व मिशन की आर्थिक रूप से मदद करते हैं।

तीसरा उद्देश्य था बच्चों में आत्मत्याग की भावना जागृत करें तथा उनके अन्दर दूसरों की मदद करने की आदत डालें।'' उन्होंने अपना उदाहरण देते हुए कहा, कि ''मैं अपनी माँ के साथ चर्च जाता था, तो अपने चंदे के पैसे और अपनी माँ के हाथों से भी पैसे लेकर चंदे में डाल देता था।'' हमें प्रतिदिन पवित्र बालक संघ के सदस्यों एवं दुनिया के सभी बच्चों की सुरक्षा-स्वास्थ्य के लिये प्रणाम मरिया प्रार्थना करनी चाहिए। मिस्सा के बाद सभी बच्चे सेंट जोसफ सेन्टर के हॉल में गये जहां फादर जेमिलटन ने बच्चों को एक लघु कथा सुनायी। तब पवित्र आत्मा का एक ओजस्वी गीत गाया। समारोह के अंत में सभी बच्चों को जलपान कराया गया।

— निर्मला जॉन, कथीड्रल पल्ली, आगरा

सेंट अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय में मची धूम

आगरा, 19 फरवरी। सेंट अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय में विद्यालय के प्रबन्धक फादर साजी पालामट्टम का जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा बेबी दिया ने किया।

सर्वप्रथम दीप प्रज्जवलित करके ईश्वर की आशीष की माँगी गयी। बेबी गोपिका, संध्या ने अपने ही शब्दों में फादर जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। साथ ही एक सुन्दर नृत्य की प्रस्तुति दी गई। जन्मदिन मना रहे फादर द्वारा केक काटा गया। मास्टर मयंक व उद्दीत ने केक खिलाकर फादर जी को बधाई दी।

विद्यालय की अध्यापिका मीनू ने फादर के व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए बताया कि ''जीवन अनमोल है व प्रभु ने हर मनुष्य को इस पृथ्वी पर एक उद्देश्य के साथ भेजा है।''

विद्यालय के सभी बच्चों ने फादर जी को फूल व कार्ड देकर जन्मदिन की बधाई दी। बर्थडे बेबी ने मानव जीवन को सार्थक करने का प्रयास करते रहने का संदेश दिया। अंत में विद्यालय के अध्यापक धर्मेन्द्र सर ने सभी के प्रति धन्यवाद दिया।

आर्मी (छावनी) क्षेत्र में योगा एवं नैचुरोपैथी सेण्टर (2) का उद्घाटन

आगरा, 20 फरवरी। वर्ष 2020 और 21 कोरोना वायरस के रूप में एक विकराल समस्या लेकर पूरे विश्व के सामने आया, जिसने लाखों लोगों को काल के

गाल में समा दिया। कोरोना से बचाव के लिए जहाँ पूरा विश्व अदृश्य शत्रु को नष्ट करने के लिए नए-नए तरीके ढूँढ रहा था, वहीं भारत में प्राचीन चिकित्सा पद्धति योग और प्राकृतिक जड़ी-बूटियों के सहारे कोरोना वायरस की प्रारंभिक लड़ाई लड़ी गयी, कोरोना से बचाव और स्वस्थ रखने के उद्देश्य से आगरा आर्मी 50 पैरा बिग्रेड के सैनिकों और परिवारीजनों के लिए योगा क्लासेस आरंभ की गयीं, जहाँ शहर के जाने-माने योग गुरु फादर जॉन फरेरा अफसरों, सैनिकों और उनके परिजनों को योगा अभ्यास करा रहे थे।

फादर जॉन फरेरा सेंट पीटर्स कॉलेज के प्रिंसिपल के रूप में तो शहर में लोकप्रिय रहे ही हैं उसके साथ ही उनकी एक और पहचान एक योग साधक और बेहतरीन योग प्रशिक्षक के रूप में भी शहर और शहर के बाहर स्थापित हो चुकी है।

फादर जॉन फरेरा की प्रेरणा और सहयोग से योग के प्रति लोगों में जागरुकता लाने के परिणामस्वरूप एक सुंदर योगशाला का निर्माण किया गया, जिसका उद्घाटन आर्मी 50 पैरा बिग्रेड के बिग्रेडियर पी.के. सिंह और श्रीमती शिवानी पी.के. सिंह ने किया। इस अवसर पर फादर जॉन फरेरा भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। फादर जॉन फरेरा ने योगशाला के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित आर्मी ऑफिसरों, सैनिकों व उनके परिवारों को योग का महत्व बताया। साथ ही कोविड-19 जैसी महामारी के साथ हम रोगों से किस तरह से अपने आप को दूर रख सकते हैं, इसके बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी दी। इस अवसर पर फादर जॉन फरेरा नैचुरोपैथी सेंटर पर योग शिक्षक का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं ने भी सभी के समक्ष योगासनों की सुंदर प्रस्तुतियां पेश कीं, जिसमें स्पाइन हैल्थ के लिये योगासन किये गये। छात्राओं की प्रस्तुति को ब्रिगेडियर पी.के. सिंह व उपस्थित सभी ने तालियों के साथ सराहा।

फादर जॉन फरेरा पिछले 6 महीनों से सैनिकों, आर्मी आफीसर्स उनके परिवारों को योगा सिखा रहे हैं। उनके मोटीवेशन के परिणामस्वरूप ही बड़ी संख्या में महिलाएं, पुरुष और बच्चे भी योगाभ्यास करते हुए देखे जा सकते हैं। फादर फरेरा का यह प्रयास आर्मी के लिए तो अच्छा है ही, साथ ही समाज में एक सकारात्मक संदेश देने वाला भी है, कि हम आज की तनाव भरी जिंदगी में योग के माध्यम से शांति, सुकून और स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं। योग के साथ फादर की यात्रा काफी लंबी है और अनेक पड़ावों को उन्होंने पार किया है, अनेक योग शालाओं से योग प्रशिक्षण प्राप्त करने के साथ उन्होंने योग पर कई किताबें भी लिखी हैं और वर्तमान में शहर में योगाभ्यास कराने के साथ योगा टीचर्स ट्रेनिंग का प्रशिक्षण दे रहे हैं। आर्मी में दिए जा रहे योग प्रशिक्षण का कार्य उनका एक और सराहनीय कदम है, जिसको लेकर छावनी क्षेत्र में भी सभी लोग काफी प्रसन्नचित हैं।

शुभ्रा शर्मा, योग प्रशिक्षिका, आगरा

एक शाम... तीर्थयात्रा के नाम!

आगरा, 23 फरवरी। कोरोना संक्रमण के चलते लम्बे लॉकडाउन के कारण सारा जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। बच्चों की पढ़ाई राम भरोसे चल रही थी। अब जब कोरोना संक्रमण पर लगभग काबू पा लिया गया है, तब सब तरफ नई जिन्दगी, नई तरंग छा गई है... मानो शीतकाल की लम्बी छुटिट्यां बिताकर हम ऋतुराज 'बसन्त' में आ

गए हैं। वातावरण में सुगन्ध है और हवा में संगीत। हमारे विद्यालय और छात्रावास भी प्रायः खुल चुके हैं। हम सभी छात्राएं अपने प्यारे सेंट जोसफ इण्टर कॉलेज, आगरा के छात्रावास पहुँच चुकी हैं।

कॉलेज खुलने के कुछ ही दिनों बाद हम सभी अपनी प्यारी प्रधानाचार्या श्रद्धेय सिस्टर क्लोडीन के साथ एक दिवसीय लघु तीर्थयात्रा पर निकले। इस बार अन्तर यह था, कि हम गत वर्षों की तरह पैदल (पदयात्रा) नहीं गए... बल्कि टैम्पो ट्रेवलर्स से तीर्थयात्रा पर गए।

सबसे पहले हम एत्मादपुर स्थित क्लॉइसटर्स सिस्टर्स के कान्वेण्ट पहुँचे। यहाँ की धर्मबहनें अपने कॉन्वेण्ट की चार दीवारों के अन्दर ही रहती हैं। रात दिन प्रभु की प्रार्थना-आराधना में रत रहती हैं। हमने भी कुछ समय उन सिस्टर्स के साथ आराधना में गुजारा और अपनी विनती-निवेदनों को प्रभु के चरणों में रख दिया। आराधना के बाद हमने उन धर्मबहनों के साथ खुलकर वार्तालाप किया। उनकी संस्था और दिनचर्या के बारे में ढेर सारे प्रश्न किए। अन्त में हमने उन्हें धन्यवाद दिया एवं बधाई (प्रार्थना) गीत गाकर उनसे विदा ली।

तत्पश्चात हम प्रतापपुरा स्थित प्रेमदान (मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी कॉन्वेण्ट, आगरा) पहुँचे। वहाँ हमने विभिन्न वार्डों में जाकर बच्चों और बड़े स्त्री पुरुषों से भेंट की। वहाँ अधिकांश लोग दिव्यांग हैं। मदर तेरेसा की धर्मबहनें तन-मन एवं लगन की भावना से उनकी सेवा करती हैं। यहाँ हर प्रकार के लोग हैं, अधिकांश समाज से तिरस्कृत और उपेक्षित हैं। फिर भी सभी लोग क्या छोटे - क्या बड़े, क्या स्वस्थ और क्या बीमार सभी एक परिवार के सदस्यों की भांति मिलजुलकर प्यार से रहते हैं।

हमने एक ही दिन में प्रार्थना में रत रहने वाली 'मरियम' से मुलाकात की, तो वहीं दूसरी ओर प्रभु की सेवा में लगी रहने वाली 'मारथा' के भी दर्शन किए।

प्रेमदान से कूचकर हम मैकडॉनाल्ड पहुँचे, जहाँ पीजा और कोल्ड ड्रिंक्स का जमकर मजा लिया। थैंक्यू सिस्टर क्लोडीन! गॉड ब्लैस यू।

— प्रिया डेविड, कक्षा 11
सेंट जोसफ इण्टर कॉलेज, आगरा

''गुरुकुल साधना एक तीर्थयात्रा समान'',— आर्चबिशप डॉ. राफी मंजलि वार्षिक गुरुकुल दिवस सम्पन्न

आगरा, 27 फरवरी। ''गुरुकुल साधना एक लम्बी तीर्थयात्रा के समान होती है। इसमें कई उतार चढ़ाव आते हैं। साधना सफलतापूर्वक सम्पन्न करने वाले साधक का ही अभिषेक होता है'', आगरा के महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि प्रतापपुरा स्थित सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी (गुरुकुल) के वार्षिक समारोह 'गुरुकुल दिवस' के अवसर पर लोगों को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर भोर में गुरुकुल प्रार्थनालय में धन्यवाद का पूजा बलिदान (मिस्सा बलिदान) चढ़ाया गया, जिसमें समाज में शान्ति, भाईचारे और सांप्रदायिक सौहार्द के लिए विशेष प्रार्थना की गई। सायंकाल गुरुकुल के प्रेक्षागृह (मेडिटेशन हॉल) में गुरुकुल छात्रों द्वारा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। आध्यात्मिक निर्देशक फादर मून लाजरस ने सभी मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर

पर छात्रों द्वारा फादर जोसफ पिण्डीकनाइल द्वारा लिखित एवं श्री लुई अल्बर्ट द्वारा निर्देशित संत यूसुफ के जीवन पर आधारित एक भावपूर्ण नाटक ''द प्रोटेक्टर'' का मंचन किया। गुरुकुलाचार्य फादर प्रकाश डिसूजा द्वारा वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। दोनों धर्माचार्यों को शॉल ओढ़ाकर और फूलों के गुलदस्ते देकर उनका अभिनन्दन किया गया।

गुरुकुल के सहायक गुरुकुलाचार्य फादर लुईस खेस ने बताया कि इस समय गुरुकुल में देश के विभिन्न राज्यों से 20 छात्र गुरुकुल शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। एक कैथोलिक पुरोहित बनने में करीब बारह-तेरह वर्ष का समय लगता है। इस दौरान छात्रों को हिन्दी-अंग्रेजी भाषा का ज्ञान, इण्टरमीडिएट एवं स्नातक की पढ़ाई, भारतीय तीज-त्योहारों, योग, शास्त्रीय एवं पाश्चात्य संगीत धर्म-संप्रदायों, शिक्षा शास्त्रों के सिद्धांत, मनोविज्ञान आदि का गंभीर अध्ययन कराया जाता है। शिक्षा पूरी हो जाने पर उम्मीदवार का पावन पुरोहिताभिषेक होता है, जब उन्हें आजीवन ब्रहमचर्य, आज्ञा पालन एवं स्वैच्छिक निर्धनता का व्रत दिलाया जाता है।

अभिनन्दन समारोह में छात्रों ने मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। थीम डांस ने सभी दर्शकों के दाँतों तले अंगुलियाँ चबवा दीं। समापन से पूर्व सेमीनेरी एंथम गाया गया। सांस्कृतिक समारोह के अंत में सभी आगन्तुकों के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था थी। **—ब्रदर सुमन टोप्पो**

कथीड्रल पल्ली के धर्मशिक्षा विभाग के बच्चों का दयालबाग भ्रमण

आगरा, 27 फरवरी। निष्कलंक गर्भागमन महागिरजाघर, आगरा के पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर इग्नेशियस मिराण्डा के नेतृत्व में धर्मशिक्षा विभाग (केटेकिज़्म) के बच्चों को पिकनिक ले जाने का निर्णय लिया गया। सभी बच्चे इस पिकनिक को लेकर बहुत उत्साहित थे। पिछले दो वर्षों में कोरोना महामारी की वजह से सब लोग मानो जैसे कैद हो गये थे। धन्यवाद पिता परमेश्वर का, जिनकी असीम दया व कृपा से हम सभी जीवित व सुरक्षित हैं और हमें यह सुअवसर मिला है, कि हम अपनी पल्ली के सभी बच्चों को घुमाने के लिए ले जा सके।

प्रात: 8.30 पर बच्चों के लिए फादर संतोष ने चर्च ऑफ पिएता (अकबरी गिरजाघर) में मिस्सा बलिदान चढ़ाया और उसके तुरंत बाद बच्चों को फादर विनिवर्सल, सिस्टर्स एवं धर्मशिक्षा विभाग की अध्यापिकाओं के साथ बस द्वारा हर्ष महाजन फार्म हाउस, दयालबाग ले जाया गया। सभी बच्चों में एक नई उमंग, जोश व उत्साह था। वहाँ पहुँचकर सभी ने नाश्ता किया और उसके बाद सबने फुटबाल, बैडमिंटन, क्रिकेट आदि खेलों द्वारा मनोरंजन किया। बालक-बालिकाओं ने सुरों की धुन पर नृत्य भी किया। इसके बाद सभी बच्चों को फादर इग्नेशियस मिराण्डा, फादर विनिवर्सल, फादर डॉमिनिक व फादर जैमिल्टन द्वारा आयोजित दोपहर का भोजन व पीने के लिए कोल्ड ड्रिंक दी गई। यह दिन बच्चों ने बहुत समय के बाद पूरी मस्ती व मौज के साथ बिताया।

— श्रीमती रेनू बैसिल, कथीड्रल पल्ली, आगरा

गुरुकुल छात्र एक दिवसीय वार्षिक भ्रमण पर निकले

आगरा, 1 मार्च। हर साल की तरह इस बार भी हम सेंट

लॉरेन्स सेमीनेरी (गुरुकुल) के छात्र व शिक्षकगण चालीसा काल शुरु होने से पहले एक दिवसीय पिकनिक व अनूप नगर, कोसीकलाँ और जैत (मथुरा) गए। निकटवर्ती कान्वेण्ट्स से कुछ धर्मबहनें भी हमारे साथ थीं।

हम अपना सफर सुबह 6.30 बजे शुरु करके सबसे पहले अनूपनगर स्थित सन्त मिखाएल चर्च पहुंचे। वहाँ फादर रोशन डिसिल्वा और उपयाजक कुलकान्त ने हमारा स्वागत किया। वहाँ हमने पवित्र मिस्सा बलिदान में भाग लिया। मिस्सा बलिदान के बाद हमने वहाँ स्वादिष्ट नाश्ता किया। तत्पश्चात हम वहाँ से कोसीकलाँ स्थित विद्या देवी जिंदल स्कूल पहुंचे, जहाँ श्रद्धेय फादर जोबी, ब्रदर स्वप्निल डाबरे और वहाँ की धर्मबहनों ने हमारा इस्तकबाल किया। वहां हमने एक मैत्री क्रिकेट मैच खेला। मैच फादर रेक्टर और फादर वाइस रेक्टर की टीमों के मध्य 12-12 ओवर का खेला गया, जिसमें फादर वाइस रेक्टर की टीम ने फादर रेक्टर की टीम को 49 रनों से हरा दिया। मैच के बाद हम वहाँ से सेंट तेरेसा स्कूल पहुँचे, जहाँ हमने दोपहर के स्वादिष्ट भोजन का भरपूर आनन्द लिया। भोजन के बाद हमने तमबोला (हाउसी) नामक एक खेल खेला। उसके बाद पूर्व रेक्टर फादर जोबी ने हम सभी छात्रों को एक-एक टी-शर्ट भी गिफ्ट दी। वहाँ कुछ देर और ठहरने के बाद हम वहाँ से निष्कलंक गर्भागमन चर्च, जैत के लिए रवाना हुए। वहाँ फादर अरुण लसरादो, फादर अजय फ्रांसटन और ब्रदर जीवन ने हाथो-हाथ लिया। वहाँ के हॉस्टल के छात्रों से बातचीत की। फिर हमने हॉस्टल के बच्चों के साथ मिलकर वहाँ के धर्मबहनों द्वारा आयोजित कुछ खेल खेले। हमें बहुत मजा आया। फिर हमने चर्च के भूतल में बने हॉल में स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। भ्रमण के दिन महाशिवरात्रि त्योहार होने के कारण मथुरा वृंदावन के कुछ प्रमुख रास्ते बंद थे। इसके फलस्वरूप हम वृंदावन के कुछ प्रमुख मंदिर और मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि देखने से वंचित रह गए। फिर कृतज्ञता की भावना के साथ हम सभी रात में लगभग दस बजे सुरक्षित अपने गुरुकुल पहुँच गए।

— ब्रदर राहुल लाकरा, आगरा

News from St. Patrick's Social Work Centre, Agra Cantt.

Agra, 1 March. St. Patrick's Parish Social Work Centre, Agra Cantt. conducted the final exams for the students of Tailoring and Beautician courses. The tailoring students put up an exhibition of their works while the beautician students did the bridal make-up. Rev. Cannosion Sisters, teachers and lay - Canossion were invited to witness the event. They had a great appreication for their presentation. There were seven students who had completed their six months' courses of tailoring and beautician. They will be awarded with certificates on forthcoming Thursday i.e. 3rd March 2022.

- Sr. Anjumary, FDCC

Holy Family Association formed in Cathedral Parish, Agra

Agra, 6 March. A new association was formed in Cathedral Parish Agra to bring together all the young couples married (in last 10 years). The specific purpose of this association is to promote the togetherness, helping one another

in building families, worshipping the Lord and committing ourselves to the service of the Church. Our Aim is to present the HOLY FAMILY as a model for Christian families.

The day began with the Holy Mass offered by Fr Santosh D'sa, Fr. Dominic George and Fr. Viniversal D'Souza who took the initiative to form this beautiful group. We entered the church in a procession. During the Mass Fr. Dominic prayed for all of us. Fr Santosh D'sa gave a meaningful sermon which touched everyone's heart. From liturgy to offertory everything was conducted the newly formed members of the Holy Family Association members.

After the Mass we proceeded to plant the saplings for new beginning. Our beloved Archbishop Dr. Raphy Manjaly and our Parish Priest Fr. Ignatius Miranda planted two Evergreen plants. Later, we proceeded to St. Felix School where a small programme was arranged to inaugurate this new association.

Words of wisdom were bestowed upon us by Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, Fr. Santosh D'sa and Fr. Ignatius Miranda. They told us how a happy Holy Family could be and how they could be a support the Church. Office Bearers were elected to run the association smoothly. It was a good start where almost 14 couples participated in the event.

We thank God for every blessing on every couple and pray that this Association turns out to be a real mode and ideal for Christian families. We wish to see this Association flourishing in other Parishes as well.

-Stephen Alexander, Cathedral Parish, Agra

The Elders' Day Out

The Lockdown kept us aprt but we remained close to each other in heart... and so as the lockdowns began to ease out, the AIAIA (All India Anglo-Indian Association), Agra Branch Committee members planned a celebration for the 'Old and the Aged' of our community, who were affected most by the restriction to our 'freedom movement'.

It was decided that we should have a 'Day Out' for the senior citizens of our community, on Sunday March 6, 2022. Rev. Fr. Stephen of St. Mary's Church, Agra, was gracious enough to allow us to use the parish hall for our get together.

The brilliant, talented, dapper and punctual elders of the community, gathered in the hall and Ms. Kimberleen Rosemeyer, the Community's Youth Representative, welcomed all, after which Rev. Fr. Stephen, prayed for the well being of the community and for the souls of the Anglo Indians whom we lost in the recent past.

After the Bible reading, and a hymn lead by Mr. Lui Alberts we all moved towards our dinning table. The grace was said by Rev. Fr. Stephen and we then proceeded for a wonderful lunch very well prepared by Mr. Tyrone D'Souza and a his family members.

The fun then began with games organized for our beloved senior citizens - 'Hoopla', was real fun with our senior members ringing lovely prizes with some very accurate throws and some by sheer fluke. It was really enjoyable!!

Then followed the 'Talk Show', in which our members, grown in years and good with words, shared their experience and motivated the young and walked away with chocolates, as prizes. Then came 'The Hallmark' of all our shows - Tambola - which is greatly loved by all our senior citizens.

After a great day of fun the members gathered in St. Mary's Church for the evening Mass offered by Rev. Fr. Prakash Rodrigues for our Senior Citizens to keep safe and healthy and for all students who were appearing for exams.

With smiles on all our faces and a new warmth in our hearts, members left for their homes happy to have been able to meet face to face after a long 'lock-in-period'.

-James Dueman, (Secretary-AIAIA, Agra)

Awareness Programme Covid-19 held at Minor Seminary, Agra

Agra, 8th March 2022. At St. Lawrence seminary was held a Covid-19 awareness program conducted by the reputed NGO German Leprosy and TB Relief Association (GLRA) India as part of its teachers and religious leaders' sensitization efforts. Mrs. Molly Jose, Counsellor, GLRA India spoke at length on variety of interconnected topics ranging from Covid -19, its prevention, connection to other diseases and general hygiene.

GLRA India along with MISEREOR, Germany is collaborating with Fatima Hospital, Agra for Project "ASAL UTTAR" (meaning - "real answer" in English). Project seeks to address and facilitate holistic interventions among the marginalized communities to mitigate impact of Covid-19 through community mobilization and stakeholder engagement. As part of various interventions planned for this two-yearproject, spreading awareness about Covid-19 remains a priority.

The module was specially designed to suit the needs and augment general health seeking behaviours of the students of St. Lawrence seminary and prepare them for future pandemics and other infectious diseases. The session was attended by all the stakeholders - respected Fathers, teachers and brothers of the institute.

The program was possible with the help of Rev Fr. Prakash D' Souza, Rector, St Lawrence Seminary, and coordination of Rev Fr. Moon Lazarus, Spiritual Director. Rev Fr. Stephen K (Parish Priest), Rev. Fr. Louis Xess, Rev Fr. Prakash Rodrigues and Rev Fr. John Ferreira (renowned Yoga teacher) were also present to witness the event. The program concluded with the lunch at the seminary premises.

- Yash Lazarus (For GLRA, India)

CRI Agra Unit is organising a Lenten Pilgrimage to Our Lady of Pilar Dholpur on Sunday, March 20, 2022

Recollection Talk, Eucharistic Adoration, Individual Confession and Holy Mass followed by sight seeing are being organised.

Contact Rev. Sr. Alpho Mathew, FCC
Rev. Sr. Savita Birji, FC

भारतः दुनिया का सबसे सुंदर गुलदस्ता

ग्रेटर नोएडा, 30 दिसम्बर। नव वर्ष के पावन पर्व पर फादर एग्नेल स्कूल, ग्रेटर नोएडा के सतरंग सभागार में इंटरफेथ के अंतर्गत एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सभी धर्मों के धर्माचार्य उपस्थित हुए। गुरुद्वारा बंगला साहिब, नई दिल्ली के मुख्य ग्रंथी जत्थेदार सरदार रंजीत सिंह जी, बौद्ध धर्म के डॉ. भिक्खु संघसेना, मुस्लिम धर्मगुरु प्रोफेसर सलीम इंजीनियर, जैन धर्माचार्य श्री विवेक मुनि जी महाराज, आर्य समाज से स्वामी संपूर्णानंद जी, रविदासिया समाज से 108 श्री वीर सिंह जी हितकारी, लोटस मंदिर से डॉक्टर ए.के. मर्चेंट, ईसाई समाज से फादर डॉक्टर एम.डी. थॉमस, फादर फैलिक्स, फादर बेन्टो के साथ-साथ शिक्षा जगत व कई सामाजिक संगठनों के विभिन्न लोग उपस्थित थे। यह कार्यक्रम भारतीय सर्वधर्म संसद एवं फादर एग्नेल स्कूल ग्रेटर नोएडा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। अध्यक्षता भारतीय सर्वधर्म संसद के राष्ट्रीय संयोजक गोस्वामी सुशील जी महाराज ने की तथा संचालन फादर फेलिक्स ने किया।

इस अवसर पर गोस्वामी सुशील जी महाराज ने कहा, कि ''भारत विश्व का सबसे सुंदर मनमोहक उद्यान है, जिसमें भांति-भांति के विभिन्न रंगों के फूल खिलते हैं, जिनके नाम हैं- हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, यहूदी, पारसी। ये अनेकता में एकता की एक अनूठी मिसाल पेश करते हैं, और मिलजुल कर रहते हैं। उन्होंने कहा, कि ''अब समय आ गया है, जब हम अपने धर्मों के साथ-साथ भारतीय धर्म का भी अनुसरण करें ताकि भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र बने और विश्व का मार्गदर्शन करें।''

जैन आचार्य विवेक मुनि ने कहा, कि ''विश्व में अहिंसा परमो धर्म का संदेश आज भी प्रासंगिक है। जियो और जीने दो की भावना का पालन हम सभी लोगों को करना चाहिए। मुख्य ग्रंथी जत्थेदार रंजीत सिंह जी ने कहा, कि ''सिक्ख पंथ के गुरुओं में बड़ा छोटा कोई नहीं है, हमें हमेशा मिल बांट कर खाना, सभी धर्मों का आदर करना चाहिए। ईश्वर एक है और हम सब उसकी संतान हैं, उन्होंने इसका संदेश दिया है और यही आज की प्राथमिकता है।''

बौद्ध धर्मगुरु भिक्खु संघसेना ने कहा, कि ''भगवान बुध का संदेश है कि घृणा घृणा से नहीं, प्रेम से समाप्त होती है। जन-जन में ''हमें युद्ध नहीं, बुद्ध चाहिए'' का संदेश पहुँचाना है।''

प्रोफेसर सलीम इंजीनियर ने अपने संबोधन में कहा, कि ''साल 2022 की शुरुआत होने को है, हम ईश्वर से प्रार्थना करें, कि यह वर्ष हम सभी देशवासियों के लिए खुशहाली और समृद्धि लाए और देश में शांति, आपसी प्रेम और विश्वास का वातावरण मजबूत हो।''

डॉ. ए.के. मर्चेंट ने कहा, कि ''क्रिसमस एवं नववर्ष के पावन पर्व पर एक बार फिर से ईसा मसीह के प्रेम व शांति के संदेश को विश्व में पहुँचाना मानव जाति का कर्तव्य बन गया है।''

आर्य समाज से स्वामी संपूर्णानंद सरस्वती जी ने

कहा, कि ''इस संसार के रचयिता परमपिता परमेश्वर हैं, यदि हम उसे मानते हैं तो हम में से कोई भी अलग नहीं है। सह-अस्तित्व की भावना के साथ हम सभी एक दूसरे से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें, जिससे समाज में भाईचारा बना रहे।''

श्री वीरसिंह हितकारी जी ने कहा, कि ''आज का मनुष्य जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा, मत, पंथ, रंग, नस्ल, आदि के नाम पर अनेक धाराओं में बैठकर कठोरता की ओर बढ़ रहा है। ऐसे समय में क्षमा के सागर; भगवान ईसा मसीह, दया के सागर; भगवान संत शिरोमणि जगतगुरु सतगुरु रविदास जी महाराज जैसे महान महापुरुषों के पावन संदेशों को आत्मसात् करने की अत्यंत आवश्यकता है।''

—फादर बिबिन जॉन (सीएसएसआर), ग्रेटर नोएडा

होली फैमिली चर्च में महिला दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

टूण्डला, 6 मार्च। होली फैमिली चर्च, टूण्डला में महिला दिवस बड़े ही उल्लास के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम महिलाओं की आरती उतारकर उनके माथे पर तिलक लगाया गया। सभी महिलाओं ने अपने हाथों में जलती हुई मोमबत्ती लेकर भक्तिपूर्वक चर्च के अन्दर प्रवेश किया। मोमबत्तियों को माता मरियम और पवित्र परिवार की मूर्तियों के सामने रखा दिया।

मिस्सा बलिदान की शुरुआत में सुश्री रीटा लाकरा द्वारा प्रस्तावना में महिलाओं के महत्व व भूमिका के बारे में समझाया गया। पवित्र मिस्सा बलिदान में पल्ली पुरोहित फादर जिप्सन पालाट्टी और सहायक पल्ली पुरोहित फादर जोसफ पसाला ने सभी महिलाओं के उज्जवल भविष्य के लिए विशेष प्रार्थना की। श्रद्धेय फादर जिप्सन ने अपने प्रवचन में हम महिलाओं के आदर्श जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रभु येसु ख्रीस्त और माता मरियम की हमारे जीवन में महत्ता को समझाया। पहला पाठ और दूसरा पाठ तथा आरती की महत्ता पर भी जोर दिया गया। **—मरियाना टिग्गा, टूण्डला**

Women's Day Special

Agra, 8 March. In our Bible we find how important is the woman. Christ took birth from the virgin lady because she was holy and immaculate. (Luke 1:26-38)

When Jesus Christ was on the cross, there too we see important role of women. Luke 19:25

At the time of Resurrection, when Jesus Christ rose again was still a woman who first got the vision of the resurrected Christ. John 20:1

Similarly, so many woman characters, in the Holy Bible.

Ruth - 1, 2, 3, 4

Rebecca - Genesis 24

Sinner Woman - Luke 7:37-50

Poor Widow - Mark 41:44

Samaritan Woman - John 4:1-3

The importance of a woman contribution to our lives cannot be cherished and appreciated in a single day.

Our grandmother, mother, sister, wife, girl friend and friends have a significant impact on our lives and their simple presence makes our lives a little bit more bearable.

Every year on March 8th International Women's Day is observed to honour and celebrate the achievements of women's across the world.

- Mahima Lal, Havelock Church, Agra

Archdiocese at a Glance...Cont.

New Provincial Bro. Mathew Thekkemury (CMSF) with his team

Happy 82nd B'Day, Dear Fr. K. Kokkatt

Blessing at Aduki (Mathura)

Prosbytery blessing, Alpha School, Mtr.

I. Faith Program, G. Noida

Creating Awareness: Fatima Hospital, Agra

GLRA: *'ASAL UTTAR'*

Fr. Abraham M.V. (CMI) is a Colonel now

Sr. Ambrosia 77, engrossed in B. Quiz

Beautician & Tailoring Courses, St. Patrick's S.W.

Lest we forget...

Sr. Rosalia E D'Chunha, SRA
(S/o Fr. John D'Chunha)
Left us on 11.02.2022

Sri Mathew Mathai
(Cousin Br. of Fr. Shaji Joseph)
Died on 07.03.2022

Fr. Antony Ninaparmbil
(B/o Fr. Martin, Etawah)
Passed away on 07.03.2022

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Nishi Augustine

With Best Compliments From :

The Manager, Principal, Staff & Students of

Jesus and Mary Convent School

Park-1, HS-12, Delta III, Greater Noida, Uttar Pradesh 201310

E-mail: contact@jesusandmarygn.org Website: www.jmcschoolgn.edu.in

For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 9457777308

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com